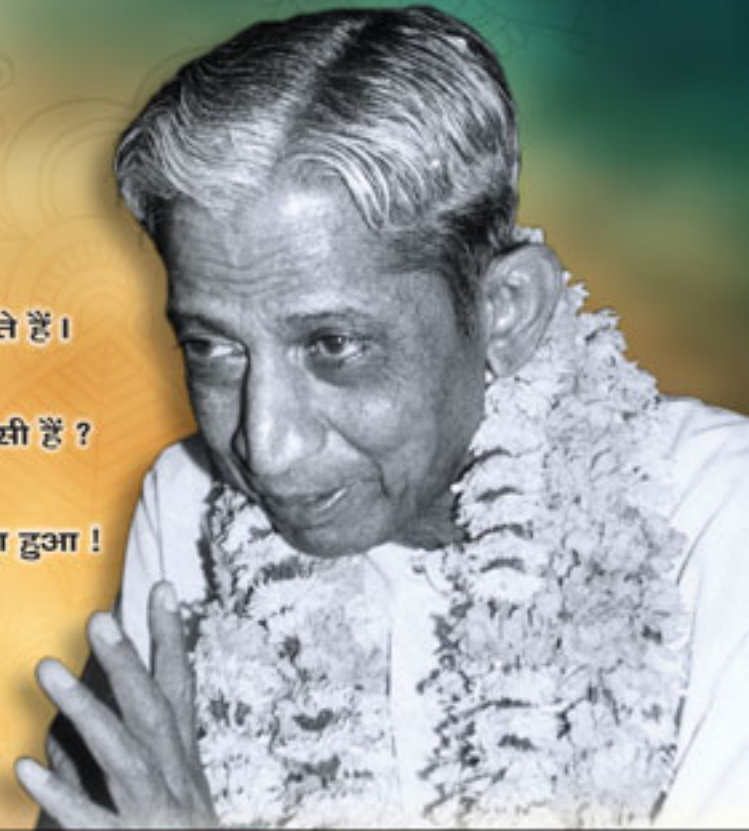


मई 2014

मूल्य: ₹ १०

दादावाणी

संसार में लोग मोह से अनावश्यक चीज़ें बढ़ाते हैं।
वास्तव में यह तय कर लेना चाहिए कि
आवश्यक और अनावश्यक चीज़ें कौन-कौन सी हैं ?
आवश्यक यानी जिसकी ज़रूरत पड़े ही और
अनावश्यक तो मोह के कारण सिर पर उठाया हुआ !



मोह



संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ९ अंक : ७

अखंड क्रमांक : १०३

मई २०१४

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ. : अडालज,

जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by

Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

मोह, आवश्यक-अनावश्यक चीजों में

संपादकीय

‘मोह’ शब्द से कौन परिचित नहीं होगा इस संसार में? लेकिन क्या वास्तव में कोई मोह के स्वरूप को पहचानता होगा? तो फिर क्या है इस मोह का वास्तविक रूप? यह मोह क्या है? मोह यानी अभानता। अभानता मतलब ‘खुद’ कौन है, वह नहीं जानना। जैसे-जैसे अज्ञानता बढ़ती है, वैसे-वैसे मोह के और अधिक साधन प्राप्त होते हैं और वह खुद अपने आप को पुण्यशाली मानता है। लेकिन इस मोह का परिणाम क्या आएगा, उसका कहाँ पता होता है।

एक जरा सा भी मोह का बीज हो तो वह पूरे जगत् में व्याप्त हो जाए, ऐसा होता है। ज्ञानीपुरुष की कृपा दृष्टि के बगैर मोह की गाँठ खत्म ही नहीं हो सकती। परम पूज्य दादाश्री सरल तरीके से समझाते हुए कहते हैं कि, ‘पूरे चित्त की चोरी हो जाए उसी को मोह कहते हैं।’ चित्त को फँसानेवाली सबसे बड़ी जगह कौन सी है? तो वह है, विषय। दूसरा स्थान कौन सा है? अनावश्यक चीजें। अतः इस संसार में आवश्यक चीजें कौन-कौन सी हैं और अनावश्यक चीजें कौन सी हैं, वह निश्चित कर लेना चाहिए। आवश्यक यानी जिसकी ज़रूरत अवश्य पड़ेगी ही और अनावश्यक तो मोह के कारण, सिर पर ली हुई। यदि हमें मोक्ष में जाना हो तो जिंदगी में आवश्यक और अनावश्यक चीजों की लिस्ट बनानी चाहिए। और फिर अनावश्यक चीजों पर से भाव हटा लेना चाहिए।

गैरज़रूरी चीजें लाए और ज़रूरत की चीजों में कसर करे, उसे मोह कहलाता है। जितनी नई चीजें देखे उन्हीं में चित्त फँस जाता है। चित्त फँसा यानी ऐश्वर्य टूट गया। जो निश्चय किया है, उस निश्चयपन को छले, ऐसा मोह नहीं होना चाहिए।

चित्तवृत्ति बिखरती है अनिश्चय से, और खुद लोगों के कहे मुताबिक चलता है। लोगों ने जिसमें सुख माना, उसी में खुद भी मानता है। जिसकी कीमत समझ में आ जाए, फिर चित्त वहीं पर भटकता रहता है। चित्त कब नहीं भटकता? जब जगत् में कोई भी चीज कीमती नहीं लगेगी, तब। यदि वहाँ खुद जागृत रहकर आवश्यक और अनावश्यक का निश्चय कर ले, तो उसके बाद गाड़ी पटरी पर आएगी। बाहर की वे चीजें जिनमें मोह व्याप्त है, उनमें से मोह कम करने के लिए, वे वस्तुएँ दुःखदायी लगने लगे, खुद को अहितकारी लगने लगे तो फिर वापस लौटता है। तब जाकर, ऐसा करते-करते मोह का फैलाव घटेगा।

यदि मोह पूरा हो ऐसी चीजें न मिल पाएँ, और इस वजह से उन चीजों के लिए अभाव रहा करे तो इसे ‘मोह चला गया’ ऐसा नहीं कहा जा सकता। उस वस्तु के मिलते ही तुरंत मोही को मोह चढ़ जाता है। यों तो खुद मानता है कि अब मुझे मोह नहीं रहा लेकिन वह तो, जब कोई अपमान करके निकाल दे, तब जाकर मोह का पता चलता है। अंदर मान का मोह होता है और कीर्ति का भी मोह होता है। लेकिन कीर्ति के बाद अपकीर्ति आती है। कीर्ति लेने जाएँ लेकिन अपकीर्ति मिले तब भयंकर दुःख होता है। इसलिए हमें कीर्ति-अपकीर्ति से परे होना है।

मीठा जब मीठा लगे, कड़वा जब कड़वा ही लगे, तब वह मोह कहलाता है और दोनों ही जब फीके लगने लगे, तो इसका मतलब मोहनीय परिणाम फीके हो गए। पूरा मोह विलय हो जाए तो अपना काम हो जाए!

परम पूज्य दादाश्री उद्बोधित प्रस्तुत संकलन में मोह के अद्भुत विश्लेषण का वर्णन किया है, और वह महात्माओं को आवश्यक और अनावश्यक चीजों के मोह के सामने जागृत रखने में सहायक हो, यही अंतर की अभिलाषा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

मोह, आवश्यक-अनावश्यक चीजों में

मोक्ष का अधिकारी कौन?

दादाश्री : आपको मोक्ष में जाना है या देवगति में जाना है?

प्रश्नकर्ता : नहीं-नहीं, मोक्ष में ही। यहीं यह अनुभूति होती है न! शुद्धात्मा के सिवा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : इस संसार के सुख जब दुःख जैसे भासित होने लगें, तब समझना कि मोक्ष के लायक हुआ। संसार के सभी सुख, दुःखमय लगने लगें। पैसा हो, स्त्रियाँ हों, आज्ञाकारी नौकर हों, सभी कहे अनुसार हो, सबकुछ सुंदर हो फिर भी दुःखमय लगता रहे, अंदर बैचेनी, अशांति रहा करे, तो वह मोक्ष का अधिकारी कहलाएगा। वैसा तो इस काल में होता ही नहीं, क्योंकि यह काल, पाँचवा आरा (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) है। लेकिन उसे अगर यह थोड़ा बहुत अच्छा नहीं लगता हो तो समझना कि मोक्ष का अधिकारी है। इतने सब मोह के बीच भी अच्छा नहीं लगना, वह आश्चर्य ही है न! कितना मोह फैला हुआ है, है न? और उसमें अच्छा नहीं लगना वह भी आश्चर्य है न!

वास्तविक सुख होम में है, न कि फॉरिन में

प्रश्नकर्ता : आपसे मिलने के बाद ऐसा होता है, दुःखमय लगता है अब?

दादाश्री : संसार दुखःदायी है ऐसा लगने लगे, तभी मोक्ष खोजेगा, वर्ना कौन मोक्ष खोजता है?

मेरा एक क्षण भी ऐसा नहीं गया होगा कि जब मुझे संसार दुखःदायी नहीं लगा होगा। क्योंकि मैं एक्जेक्टनेस ढूँढ रहा था न! यदि खटमल आता तो खटमल को काटने देता था, वही एक्जेक्टनेस। और खटमल को हटा दिया तो फिर संसार दुखःदायी लगेगा ही नहीं न! आपको क्या लगता है? इतना दुखःदायी है फिर भी दुःख महसूस नहीं होता तो वह किस प्रकार का मोह है? (यह संसार) प्रतिक्षण दुखःदायी, प्रतिक्षण भयवाला है, निरंतर भय! एक ‘समय’ भी भय रहित नहीं है, ऐसा है यह जगत्। क्योंकि परक्षेत्र में बैठा हुआ है। जबकि स्वक्षेत्र में कोई भय है ही नहीं। परक्षेत्र यानी फॉरिन में बैठा हुआ है। फॉरिन को ही होम मानता है और होम का तो पता ही नहीं है। होम को तो रियलाइज़ ही नहीं किया कि होम यह है या वह?

कब तक हम इस फॉरिन को होम मानते रहेंगे? फॉरिन को होम मानें तो परदेश का भला किया। खुद का गया, भटक गया।

अब आप फॉरिन को फॉरिन मानते हो और होम को होम मानते हो, इसलिए काम हो गया आपका।

दृष्टि बदल जाने से प्राप्त हुआ स्वसुख

पहले तो हम सभी ने मान लिया था कि ये सभी सुख की खोज में निकले हैं। इसलिए हमने उन लोगों का तरीका आजमाया था। इन लोगों ने जो रीत आजमाई, वही हमने आजमाई। लेकिन अब तो

अलौकिक रीत उत्पन्न हो गई है। इसलिए हम समझ गए कि इससे तो मार पड़ेगी। इसमें स्वाद ही क्या है? स्वाद तो खुद के घर (आत्म स्वरूप) में है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, मार खाई, इसीलिए पता चला न बाहर के सुख का।

दादाश्री : नहीं रे! जब मार खाई तब मोह बढ़ रहा था। यह तो इस ज्ञान से जरा शांति हो गई। इसलिए तुरंत ही इस तरफ का झुकाव हुआ। वर्ना जब मार खाता है, तब कहता है 'ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा।' उपाय ढूँढता रहता है, लेकिन उपाय हाथ में आ नहीं पाता न! मार खाने से कुछ भला नहीं हुआ। यह तो, सिर्फ यह ज्ञान मिल गया, यानी पिछले जन्म का कोई बड़ा पुण्य मिल आया इसलिए अपना काम हो गया। दृष्टि बदल गई, अंजन लग गया। निरंजन अंजन। तो काम हो गया।

मोह अब उतरेगा, वह बात अलग है लेकिन अभी तो मोह चोटी पर जाकर बैठा है, इससे क्या दशा होगी लोगों की?

मोह यानी अभानता

प्रश्नकर्ता : दादा, यह मोह वास्तव में है क्या? इसका स्वरूप क्या है?

दादाश्री : क्रोध-मान-माया-लोभ, वही है मोह। पुरुषों में क्रोध और मान का मोह, इन स्त्रियों में लोभ और कपट का मोह!

लोग कहते हैं, मोह क्या है? तो फिर अभी चंद्रभाई यों तो सचमुच अच्छे इंसान दिखाई देते हैं, लेकिन यदि एक बोटल (दारू) पिला दी जाए तो? 'मैं महावीर हूँ, मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ' बोलेगा। तो हम जान जाएँगे न कि अब चढ़ गई है! उसे 'मोह चढ़ गया' कहा जाएगा। इसी को मोह कहते हैं। खुद के स्वरूप को भूल जाना और अन्य स्वरूप में आरोपण करते ही रहना, कि 'मैं महावीर हूँ,' वही है मोह।

मोह यानी अभानावस्था। अभानावस्था यानी 'खुद' कौन है' इसे नहीं जानना। 'जो है वह' दिखाई नहीं देता है और 'जो नहीं है' वह दिखाई देता है, इसी को मोह कहते हैं। अहंकार का स्वरूप मोह नहीं है, मोह का स्वरूप अहंकार है। अहंकार का जन्मधाम मोह है। सांसारिक हिताहित का भान चला जाए, वही मोह है। संसार में जिस किसी भी प्रकार के दुःख हैं, उन सभी का कारण मोह है। मार खाए और भूल जाए, मार खाए और भूल जाए, वह कहलाता है मोह।

जैसे-जैसे अज्ञानता बढ़ती है, मोह बढ़ता है, जैसे-जैसे मोह के और अधिक साधन प्राप्त होते हैं और खुद अपने आपको न जाने क्या मानता है कि मेरे कितने पुण्य होंगे कि मुझे यह बंगला मिला, पंखे मिले! यानी मोह अधिक व्याप्त हो गया है। जैसे-जैसे मोह अधिक बढ़ रहा है जैसे-जैसे गड्डे में और अधिक गहराई में उतरता ही गया। इससे तो बल्कि फँसता जाता है। कीचड़ में डूबने के बाद जैसे-जैसे निकलने का प्रयत्न करता है, जैसे-जैसे अधिक फँसता जाता है, वैसी दशा होती है! कहाँ वीतरागों का मोक्षमार्ग और कहाँ यह दशा?

जहाँ-जहाँ मोह प्रवेश करे, वहाँ-वहाँ दुःख होता है। बहुत दुःख सहन किए हैं। यदि उसकी सूचि तैयार करें न तो भी मोह छूट जाए। फिर भी मोह कम नहीं होता और मार खिलाता रहता है। 'भीतर' पड़े हुए घाव भर जाते हैं, वह मोह की वजह से ही। वर्ना वैराग्य ही आ जाए न?

मोह के व्याप से, फैला संसार

यह तो, सामाजिक सीमाओं की वजह से मोह का फैलाव कुछ कम प्रसरा है, वर्ना मोह पूरी तरह से फैल जाए, चारों ओर से घुस जाए! यह तो ऐसा है न कि कुछ सीमा में आ गए हैं और जिसके लिए कोई सीमा नहीं रखी गई हो, उसका क्या होगा?

दादावाणी

क्रोध-मान-माया-लोभ सभी स्टॉक कम हो जाएँ, ऐसा समय आया है। और वह कम हो तो दूसरी तरफ मोह बढ़ जाता है। यदि पड़ोसी सोफासेट लाया हो, तो खुद भी सोफासेट लाने की तैयारी करता है। अरे भाई, सोफासेट के बगैर हम कोई मर थोड़े ही रहे हैं? पत्नी बार-बार कहती रहती है न कि पड़ोसी ले आए हैं और आप नहीं लाते हो। 'अरे भाई, हमें खाने के लिए दाल-चावल चाहिए।' यानी खाने की चीजें, नेसेसिटी तय तो करनी चाहिए न! पैमाना निश्चित नहीं करना चाहिए कि नेसेसिटी क्या-क्या है?

पत्नी कहे कि 'अपने इन सोफों की डिज़ाइन अच्छी नहीं है। आपके मित्र के यहाँ गए थे न, उसकी डिज़ाइन कितनी सुंदर थी!' अरे, क्या इन सोफों से तू सुखी नहीं है? तब कहती है कि 'नहीं, मैंने वहाँ जो देखा, उसमें सुख लगता है।' बाद में पति को वैसा ही सोफे लाने पड़ते हैं! अब जब वह नए ले आए और कभी अगर बेटा ब्लेड से कहीं काट दे तो वापस भीतर मानो आत्मा कट जाता है! बच्चे सोफा काट देते हैं या नहीं? और उस पर कूदते भी हैं न? जब कूदते हैं, तब मानो उसकी छाती पर कूद रहे हों, ऐसा लगता है!

अगर थोड़ा सा भी कुछ हुआ हो तो अंदर दरारें पड़ जाती हैं। यानी मोह की कुछ हद होनी चाहिए। मोह बेहद नहीं होना चाहिए न? सोफासेट में चीरा लग जाए तो कुछ होता है क्या लोगों को?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होता है। भयंकर, 'तुझ में अक्कल है या नहीं, यह क्या किया?' शोर मचाकर रख देते हैं।

दादाश्री : कृपालुदेव क्या कहते हैं? 'देह जाए तो माया हो न रोम में' और यह तो अगर सोफासेट पर चीरा लग जाए तो माया हो जाती है, कब निबेड़ा आएगा इसका?

अनंत जन्मों से भटक रहे हैं। कितना सारा मोह है? ऐसे तकिए और ऐसी गद्दी और ऐसा फ्लेट।

निरा मोह, बिना बात के मोह किया। यह सिर पर ले जाना है, क्या साथ में जाना है? अतः यह जो मोह है, यह मोह ही काट-काटकर आपका तेल निकाल देगा। अभी जो मोह दिखता है, वह देखने का मोह है। और इस मोह की वजह से ठोकरें खा-खाकर दम निकल गया है!

मोह से आ जाती है अभानता

यह तो खुद ही जंजाल से लिपटता है। हर रोज़ और ज़्यादा लिपटता जाता है। घर में बगीचा नहीं था, तो लोगों के बगीचे देखकर खुद बगीचा बनाता है। फिर वहाँ खोदता ही रहता है, खाद ले आता है, फिर पानी डालता रहता है। बल्कि यह जंजाल बढ़ाता ही जाता है, मुआ।

प्रश्नकर्ता : खुद को क्यों पता नहीं चलता कि यह मोह है?

दादाश्री : यदि इस पंखे को बहुत ज़ोर से चलाएँ तो पंखे की पत्तियाँ दिखेंगी क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं दिखेंगी।

दादाश्री : इसी प्रकार जब मोह ज़ोरों पर होता है न, तब इस जगत् की किसी भी चीज़ का भान ही नहीं रहता, दिखता ही नहीं है कुछ भी। अभान ही हो जाए। इतने अधिक ज़ोरों से मोह का चक्कर चलता है। जैसे-जैसे वह मोह कम होता जाता है, जैसे-जैसे पत्तियाँ दिखने लगती हैं। जैसे-जैसे मोह कम होता जाता है, जैसे-जैसे दिखने लगता है। तब आत्मा का अनुभव होता जाता है। उसके बाद उसे विश्वास होता जाता है। हाँ, वरना उसे पत्तियाँ दिखाई ही नहीं देतीं। उसे केवल वह चक्र ही दिखाई देता है। ऐसा है मोह, मोह का स्वभाव!

ज्ञानी की कृपा से छूट जाए दर्शन मोह

प्रश्नकर्ता : वह मोह की गाँठ किससे तोड़ी जा सकती है?

दादावाणी

दादाश्री : मोह की गाँठ को तो ज्ञानी के सिवा ओर कोई खत्म कर ही नहीं सकता।

मोह तो, जो कोई हम से मिले तो उससे कहते हैं कि आप चंदूभाई नहीं हो। वह कहता है, 'मैं तो चंदूभाई हूँ।' मेरे माँ-बाप भी यही कहते हैं, सभी कहते हैं, मेरी वाइफ भी कहती है न! फिर आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? 'अरे भाई, नहीं हो आप चंदूभाई। आपका नाम है यह तो।' तब उसे शंका होने लगती है कि बात तो सही है। नाम ही है मेरा। तो फिर मैं कौन हूँ? फिर असमंजस में पड़ जाता है। उसके बाद जब दादा बता देते हैं तब वह दर्शनमोह टूट जाता है। आवरण खत्म हो जाते हैं, अंधेपन के। देखना शुरू कर देता है। अंधा पट्टी बाँधकर घूम रहा था न, तो अब देखने लगता है। दर्शनमोह टूटने के बाद वह दिखाई देने लगे तो लोग कहते हैं 'क्यों इतने सारे गहने पहन रखे हैं?' इतना मोह? वह आपको पता नहीं चलेगा कि यह मोह है। लेकिन वह मोह है, चरित्रमोह है। यानी पहले जो भी मोह भाव किए थे, उनका यह फल आया है। यह इफेक्ट है, नाँट काँजेज़। काँजेज़ बंद हो गए हैं। जिसके काँजेज़ बंद हो गए हैं, उसका मोक्ष होगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, और किस प्रकार से दर्शनमोह छूट सकता है?

दादाश्री : और कोई रास्ता नहीं है, मोह के तो अनंत प्रकार हैं। उनका अंत आ सके, ऐसा नहीं है। एक मोह छोड़ने के लिए लाखों जन्म लेने पड़ें, ऐसा है। मनुष्यपन तो मोह का संग्रहस्थान ही है! 'स्वरूप ज्ञान के बिना मोह जा सके, ऐसा नहीं है।' दर्शनमोह यानी क्या कि ऐसा सब देखता है, उसके बजाय पीछे की तरफ का दिखे, उस तरह से देखना। ज्ञानीपुरुष दृष्टि बदल देते हैं, खुद अपने आप नहीं बदली जा सकती।

ज्ञानी दृष्टि बदल देते हैं। यह संसार-दृष्टि है और पीछे आत्म-दृष्टि है। वे आत्म-दृष्टि की तरफ

दृष्टि मोड़ देते हैं। उसके बाद समझ में आ जाता है कि 'मैं यह चंदूभाई नहीं बल्कि शुद्धात्मा हूँ।'

अब फिर से मोह उत्पन्न नहीं होगा, है न? और चरित्रमोह अच्छा नहीं लगता। होगा तो सही लेकिन अच्छा नहीं लगता कि भाई, अब ऐसा न हो तो अच्छा है।

अब यह तो जो महात्मा हों, उन्हीं को समझ में आएगा। या फिर अगर बाहर का कोई बुद्धिमान हो तो समझ जाएगा कि यह मोह तो कुछ कम हुआ लगता है, ऐसा मालूम पड़ता है।

मोह में डूबने से बचाया अक्रम विज्ञान ने

अभी तो अच्छे कपड़े पहनते हैं, घड़ी चाहिए, चश्मा चाहिए, ऐसा चाहिए, वैसा चाहिए, इत्र चाहिए। इतना सारा मोह, कितने मोह के बीच आप रहते हो! आपकी थाली में पूरा मोह देखे न, आपके कपड़ों का मोह देखे, आपका फ्लोट का मोह देखे, ऐसा सब यदि कोई पुराना परिचित आए और देखे तो कहेगा, 'अरे! मोक्ष की बात क्यों कर रहे हो?' और ऐसे में इस वीतराग विज्ञान, अक्रम विज्ञान ने आपको डूबने से बचाया है, वह भी अजूबा है न!

मोह से चिपकता है चित्त चीजों में

दादाजी, मुझमें मोह बहुत है और दूसरों में कम होगा, ऐसा है क्या?

दादाश्री : एक ज़रा-सा मोह का बीज हो तो, वह जब व्यक्त होता है, तब पूरे संसार में व्याप्त हो जाए, ऐसा है। इसलिए कम हो या ज्यादा, उसमें समझ को लेकर अंतर नहीं है। जब संपूर्ण मोह क्षय हो जाता है, तभी काम बनता है।

प्रश्नकर्ता : मोह को पहचानने का रास्ता क्या है? मोह को किस तरह पहचान सकते हैं?

दादाश्री : मोह को भला तूने कैसे पहचान

लिया कि यह मोह है? क्या पहले से ही पहचानता है, हैं न?

प्रश्नकर्ता : बाद में पता चलता है, हो जाने के बाद, पहले से पता नहीं चलता।

दादाश्री : ऐसा क्या? हाँ, लेकिन बाद में पता चलता है, हैं ना? मुंबई में चंदूभाई...आप दो जने आ रहे हों, तू और तेरी वाइफ दोनों। व्यापारी साड़ियाँ दुकान के बाहर लटकाते हैं, वे रोड पर क्यों लटकाते होंगे। सुखाने के लिए? सुखाने के लिए नहीं? तो किसलिए? कहां न, किसलिए?

प्रश्नकर्ता : लोगों का ध्यान जाए, उसके लिए।

दादाश्री : हम व्यापारी से पूछें कि 'भाई, क्या तूने ये साड़ियाँ सुखाने के लिए रखी हैं?' तब वह कहेगा, 'नहीं ये शो के लिए हैं। लोगों को आकर्षित करके उनसे पैसे लेने हैं। मुझे व्यापार करना है।' 'अरे, लेकिन साड़ी जैसी जड़ वस्तु आकर्षित करेगी? तब कहेगा, 'अच्छे अच्छों को आकर्षित करेगी। पहननेवाली को आकर्षित करेगी और जो पहनना नहीं है, उस पुरुष को भी आकर्षित करेगी।' इस साड़ी में तो इतनी अधिक शक्ति है!

खुदा भ्रमित हो जाएँ, खुदा अंदर चिपक जाए इसलिए लटकाते हैं। खुदा फँस जाएँगे या नहीं फँसेगे?

प्रश्नकर्ता : फँस जाएँगे।

दादाश्री : यह कैसा है साड़ी का? पिंजरा होता न उसमें हम रोटी लटकाकर रखते हैं, तो वह किसलिए? चूहे को अंदर फँसाने के लिए। ठीक वैसे ही ये लोग साड़ी रखते हैं, 'कोई देखेगा तो उसके चित्त का हरण हो जाएगा।'

वह स्त्री को खींचे इसलिए बाहर जाल बिछा रखा है कि कोई चिड़िया फँसती है क्या इसमें! वे चिड़ियों को फँसाने के लिए लटकाते हैं बाहर। ये स्त्रियाँ तो जानती हैं कि पास में डोलर है, इसलिए

साड़ी देखकर चित्त चमक उठता है और कहती हैं साड़ी बहुत अच्छी है बाद में चित्त वहीं चिपक जाता है।

स्त्री उस साड़ी को देखकर पति से कहती है 'देखी न आपने?' तब पति समझ जाता है कि अपने सिर पर पड़ेगी। 'हाँ, देखी, देखी, ऐसी तो बहुत होती हैं' ऐसे कहता है। वह पत्नी को पटाने जाता है लेकिन यह पटती नहीं है और फिर स्त्री की चित्तवृत्ति चोरी हो जाती है वहाँ पर। सो स्त्री घर तो आ जाती है लेकिन उसका चित्त तो वहीं का वहीं दुकान में साड़ी में ही होता है। और फिर जब पत्नी घर आती है तब उसका मुँह देखें तो लगता है कि जब हम निकले थे तब जैसा था, अभी तेरा चेहरा वैसा नहीं है। बाज़ार में कुछ खो गया है, हम कहें कि 'चेहरा ऐसा क्यों दिख रहा है? तुझे आज ठीक नहीं है या और कुछ? चेहरा उतर सा गया है न!' तब कहेगी, 'कुछ नहीं, कुछ नहीं।' उस बेचारे को क्या पता कि यह जो घर में घूम-फिर रहा है, वह तो पुतला ही है, स्त्री का चित्त तो दुकान पर साड़ी में ही है। वह साड़ी में खो गई होती है।

चित्त वहाँ चिपक गया है इसलिए बेचित्त हो जाती है। फिर उसे बिल्कुल भी चैन नहीं पड़ता। वह तो, जब साड़ी ले आए, तब चैन आएगा। 'पूरा चित्त चोरी हो गया है बेचारी का। अब साड़ी में ही चित्त रहा करेगा।' आग लगे तेरी साड़ी में! वहाँ पूरा चित्त चोरी हो गया, वही मोह है। आपका यह चित्त इस तरह सब कहाँ-कहाँ खो गया होगा?

मोह होता है चार्ज, तन्मय होने से

राह चलते, किसी स्त्री ने दुकान में साड़ी देखी और उसमें तन्मयाकार हो गई। दुकान में साड़ी देखी उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन उसके लिए मोह उत्पन्न हुआ, उसी का हर्ज है। साड़ी को देखा और पसंद आई, वह डिस्चार्ज मोह है, लेकिन वह उसमें ऐसी तन्मयाकार हो जाती है कि जो मोह डिस्चार्ज होने लगा था, वह फिर से चार्ज हो जाता है। वह

दादावाणी

साड़ी में ऐसी तन्मयाकार हो जाती है कि साड़ी सवा छः मीटर लंबी हो, तो स्त्री भी सवा छः मीटर की हो जाती है। साढ़े तीन मीटर चौड़ी हो, तो वह भी साढ़े तीन मीटर चौड़ी हो जाती है। साड़ी में जितने फूल हों या शीशे हों उतने स्त्री को भी हो जाते हैं। प्रतिष्ठित आत्मा उसमें ही रमा हुआ रहता है।

जो हमें मूर्छित करे, बेहोश करे वह मोह कहलाता है।

विलय होने दें, उस मोह को

प्रश्नकर्ता : दादाजी, साड़ियों का बहुत मोह है, अच्छा, अच्छा पहनने का मोह है। अब उसे निकालना है, यहाँ सभी रख देना है!

दादाश्री : ऐसा है न, ऊपर अब लकड़ी के भूसे से मत ढकना। हम बर्फ को घर लाए। मैंने कहा कि बर्फ लाकर रख दो। मुझे पिघलाना पड़ेगा या फिर अपने आप पिघलता रहेगा?

प्रश्नकर्ता : अपने आप पिघलेगा।

दादाश्री : उसमें क्या करते हैं फिर? वापस भूसे से ढक देते हैं और फिर कहेंगे निकाल दीजिए। वह तो अपने आप पिघलता ही रहता है। बर्फ का स्वभाव ही ऐसा है।

अंदर जैसी वासना, वैसे परिणाम

प्रश्नकर्ता : लेकिन अभी भी वह मोह होता है, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : वह पूर्वजन्म की वासना है इसलिए हरण करती है। यदि वासना नहीं होगी तो हरण नहीं करेगी। जैसे फॉरिन से कोई बहन आई हो, फिर दुकान में भले ही कैसी भी साड़ी लटकाई हुई हो, फिर भी उसमें वासना नहीं भरी हुई है, इसलिए उसका चित्त नहीं हरेगी।

अगर लेडी का कपड़ा हो और चाहे कितना

भी अच्छा हो, फिर भी पुरुषों के चित्त का हरण नहीं करेगी। क्योंकि उन्होंने वह वासना नहीं भरी है। जो भरी हुई है, वह आपको हाल ही उदय में आती है। जब उदय में आए तब उस वक्त 'मैं कौन हूँ', ऐसा जान लें तो वासना छोड़ देंगे फिर। वर्ना इससे छुटकारा ही नहीं है।

अहंकार से जोर मारना चाहिए कि मुझे साड़ी वगैरह कुछ लेना ही नहीं है। बस, ऐसा निश्चय करो, तो फिर मन भी मजबूत होता है, सबकुछ कर सकता है।

मन के समाधान से रुके वासना

प्रश्नकर्ता : पूर्वजन्म के उदयकर्म के हिसाब से हममें जिस इच्छा का उद्भव हुआ उसे यदि हम मनोबल से काबू में रखें कि 'नहीं इस दिशा में नहीं जाना है,' इस तरह संयम से, तो क्या वह वापस खड़ी होगी?

दादाश्री : होगी। जब तक मन का समाधान नहीं होगा, तब तक होगी। दमन किया हुआ नहीं चलेगा, वह वासना फिर छोड़ेगी नहीं।

हमारा यह ज्ञान सर्व समाधान लानेवाला है। यानी अंदर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' आ जाता है, इसके बावजूद भी वासना खड़ी हो जाए, तो दे देना चाहिए। क्योंकि इस जन्म में निपटारा आ ही नहीं रहा हो, अगर मन मानता ही नहीं हो तो उसे दे देना चाहिए। यदि मन पंद्रह दिन तक उसे छोड़े ही नहीं, तो फिर उसे दे देना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : मन का समाधान करना चाहिए?

दादाश्री : करना ही चाहिए, वर्ना अड़चन होगी न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वर्ना तो फिर मन दलील करता रहेगा।

दादाश्री : उससे तो फिर परेशानी हो जाएगी। अपना पुरुषार्थ ही नहीं होने देगा।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : मनोबल से अगर वह इच्छा ही छूट जाए, वह वासना ही छूट जाए और फिर यदि याद ही नहीं आए...

दादाश्री : तो हर्ज नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह भुगतनी नहीं पड़ेगी न?

दादाश्री : नहीं-नहीं। फिर तो हर्ज नहीं है। अपने अंदर अफसोस नहीं रहना चाहिए। अगर अफसोस रह जाए तो आप उसे पलटकर दोबारा करो। सीधे-सीधा, साफ-सुथरा हो जाए और मन का क्लेम नहीं रहे तो बस, हो गया। मन का किसी भी प्रकार का क्लेम नहीं रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इस बार आपने यह जो उपमा दी वह बहुत पसंद आई कि उन विदेशी स्त्रियों को कभी भी साड़ी की इच्छा नहीं होती।

दादाश्री : दुकानदार कहेगा, आज हमें आधे दाम में देनी है। फिर भी कहेगी कि 'यह मेरे काम की नहीं है। तू मुफ्त में दे रहा हो तो भी मेरे काम की नहीं है।' क्योंकि ऐसी वासना की ही नहीं है। और जिसने ऐसी वासना की हो उसे छोड़ेगी नहीं। अब वह छोड़ेगी कब कि अगर वासना हल्की की होगी तो मन अभी उसे केन्सल कर सकेगा और अगर गाढ़ वासना की होगी तो मन के बाप का भी नहीं चलेगा। अतः तब उसे कहना चाहिए कि 'ले भाई आम खा ले।' यदि मैंने आपसे कहा हो कि 'आम मत खाना।' तब भी आप यहाँ आकर मुझसे पूछ लेना कि 'अब यह नहीं छोड़ा जा सकता इसलिए दादाजी कुछ कहिए न!' तो मैं कहूँगा कि 'आम खा लो' कोई हर्ज नहीं। यह कोई ज़हर नहीं है। हमें नहीं खाना हो, फिर भी खाना पड़े, तो वह पोइज़न नहीं कहलाता।

पूरण किया हुआ, होता है गलन

प्रश्नकर्ता : तो दादाजी, वास्तव में (इच्छा)

ज्ञान से उसका दमन किया है या नहीं, उसका थर्मामीटर यही है न कि याद ही नहीं आए?

दादाश्री : वह दमन किया हुआ है, मतलब जब याद नहीं आए तो उसका निबेड़ा आ गया है ऐसा कहलाएगा और यदि याद आया है इसका मतलब अभी तक उसने पीछा नहीं छोड़ा है। ऐसा समझ लेना कि यह पीछा नहीं छोड़ रहा है तो 'ले तेरा! ले जा यहाँ से!'

प्रश्नकर्ता : हाँ, ले जा।

दादाश्री : 'दादाजी की आज्ञा का पालन नहीं करूँगा लेकिन तू ले जा यहाँ से' 'फिर बाद में दादाजी के पास जाकर इलाज करवा लूँगा,' कहना। दादा ऐसे नहीं है, दादाजी के पास सभी दवाईयाँ हैं। आज्ञा का पालन नहीं किया हो तो उसका भी इलाज है। अगर मुझ से आकर कहो कि 'मेरे से आज्ञा का पालन नहीं हुआ है' तो मेरे पास दवाई है। सभी दवाईयाँ होंगी तभी तो अस्पताल कहलाएगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ सभी दवाईयाँ होंगी, तभी अस्पताल कहलाएगा। बात ठीक है, दादाजी।

दादाश्री : चौदह सालों में काफी कुछ टंकी खाली हो जाती है, मोह की। यानी पूरण (चार्ज होना) किया हुआ गलन (डिस्चार्ज होना) हो जाएगा। उसके बाद आप पर ज़्यादा बोझ नहीं रहेगा।

संसार जाल में फँसते हैं, मोह से

अरे, क्या जंजाल में फँसे हुए इंसान को शौक रहता है? झटपट हल लाओ न! ऐसी झंझटों में फँसे हैं फिर भी हीरे दिखाने के लिए घूमती हैं। कान में हीरे के लौंग पहनती हैं, लेकिन क्या वे खुद को दिखाई देते हैं? ये तो लोगों को दिखाने के लिए हीरे पहनती हैं। पति कहे तो पति को अच्छा दिखाने के लिए पहनो। सेठ दो हज़ार के हीरे के लौंग लाए हों और पैंतीस हज़ार का बिल लाए तो सेठानी खुश हो जाती है। लौंग खुद को तो दिखते नहीं। सेठानी से मैंने

पूछा कि 'रात को सो जाते हो, तब कान के लौंग नींद में भी दिखते हैं या नहीं? यह तो माना हुआ सुख है, रोंग मान्यताएँ हैं। इसलिए अंतर शांति नहीं रहती।

स्त्रियाँ सोना पहनती हैं, वह किस वजह से? मूर्छा से। पाँच सेर के गहने दे दिए जाएँ तो वे भी पहन लेंगी। यह सब मूर्छा है। इन स्त्रियों को इसका भार भी नहीं लगता। मैंने कहा, 'क्या इसका आपको बोझा नहीं लगता?' 'नहीं, नहीं इससे तो बहुत आनंद होता है।' क्योंकि इसे (सुख) माना है न! सोने में उसकी मान्यता है। सभी दुःख भूल जाती है।

मोह की वजह से गहने ले आती हैं। जब तक मोह है, तब तक गहने लाती है और जब गहनों का मोह उतर जाए, तब दे देती है।

चीजों के स्पर्श से स्फुरित होता है मोह

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मुझे अब गहनों का मोह नहीं है लेकिन कपड़े ज़रा अच्छे चाहिए।

दादाश्री : वह सब मोह ही है। गहने नहीं हों लेकिन जब गहने पहनेगी तब वापस उसका भी मोह चढ़ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : नहीं दादाजी, उसकी गारन्टी।

दादाश्री : नहीं, वह तो हीरे पहने तो हीरों का मोह चढ़ जाएगा। यह तो स्वभाव है, चीजों का स्पर्श हुआ कि उसका मोह चढ़ जाता है मोही को। निर्मोही को कुछ छू भी जाए तो कोई हर्ज नहीं।

एक व्यक्ति को पूरी जिंदगी जेल में गुज़ारनी पड़े और उसे खाना तो मिलता रहे लेकिन जलेबी-लड्डू नहीं मिलें तो, थोड़े ही उसका मोह चला गया? नहीं! अंदर तो मोह रहता ही है। नहीं मिलता, इसलिए ऐसा नहीं कहा जा सकता कि 'मोह चला गया।'

प्रश्नकर्ता : इस शरीर का अच्छी तरह ध्यान रखूँ, ऐसा सब मोह है। ये बाल कितने सफेद हैं, लेकिन इन्हें डार्क करने का मोह नहीं जाता।

दादाश्री : हाँ, नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : वह चाहिए। दादाजी ऐसा रहा करता है कि ज़रा ढंग से रहें-करें। गहनें नहीं, लेकिन कपड़े ज़रा ढंग के चाहिए।

दादाश्री : वह तो पहले की आदत पड़ी हुई है, तो जाएगी नहीं लेकिन आपको अंदर कहना है कि 'आप थोड़ा तो बदल जाओ, इस तरह कब तक बाल काले करोगी?' लेकिन फिर भी वह बाल काले किए बगैर नहीं रहेगी।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा ही होता है।

दादाश्री : क्योंकि वह तो द्रव्यकर्म है लेकिन हमें भाव बदल देने हैं।

पूर्व का भरा हुआ मोह, होता है डिस्चार्ज इस जन्म में

प्रश्नकर्ता : दादाजी, अभी भी इतना मोह क्यों उत्पन्न होता है?

दादाश्री : आप, ऐसा कैसे कह सकती हो? आप मुझ से पूछे बगैर मार्केट चली जाओ, तो फिर क्या-क्या सब्जी भर कर लाओगी? जेब में यदि पैसे हों तो क्या-क्या नहीं भर लाओगी आप?

प्रश्नकर्ता : सभी कुछ। नहीं चाहिए वह भी भर लाएँगे। नहीं चाहिए वह भी आ जाएगा।

दादाश्री : यानी कि भरते समय ऐसा ही सब माल भरा था। जो नहीं चाहिए, वही सब लाए हो। मुझे थोड़ा सा ही चाहिए था इसलिए मैंने वह नहीं भरा, जो नहीं चाहिए था।

खुद का सुख किसमें है?

ये सब बोझा है, मोह है। मूर्छावाला ही सह सकता है, मूर्छा रहित कोई भी सह नहीं सकता।

मैं तो कोई चीज़ लाया ही नहीं हूँ। ऐसा मोह

दादावाणी

ही नहीं है। किसी भी प्रकार का मोह नहीं। ऐसी कोई चीज़ ही नहीं है कि जिससे मुझे मोह उत्पन्न हुआ हो! और मैं घर के लिए भी कुछ नहीं लाया हूँ। घर में कभी कुछ खरीदा ही नहीं था।

प्रश्नकर्ता : मोह ही उत्पन्न नहीं हुआ, फिर कहाँ से इच्छा होगी?

दादाश्री : स्वतंत्रता में सुख माना था। ये सब तो निरी झंझट हैं। ये कोई सुख है क्या? लेकिन और कोई चारा ही नहीं है न! आप कहाँ जाओगे? यदि ये सुख नहीं भुगतते तब भी कहाँ जाओगे? दुःख भी भुगतना पड़ेगा और सुख भी भुगतना पड़ेगा। कर्म में लिखा हुआ है न, और हिसाब है न! ज्ञान मिल जाए तो ही सुख और दुःख पलट सकता है। यह मोह भुगतना (सुख-दुःख का असर) तो पड़ता ही है, लेकिन ज्ञान के प्रताप से भुगतने में असर नहीं होता।

आजकल, इन लोगों में कोई सेन्स ही नहीं है। खुद का सुख किस में है उसकी सुध ही नहीं है और खुद की भी सुध कहाँ है? वह तो लोगों ने जो भान (सुध) दी है, वही भान है।

मोह में व्यर्थ नष्ट हो रहा है, कीमती जीवन

ये जीव (मनुष्य) और कुछ नहीं हो तो रेडियो और टी.वी. की ही मस्ती में चूर रहते हैं। टी.वी. देखकर, खुद की आँखें खराब करते हैं। दूसरों की आँखों से थोड़े ही देखते हैं? और उसमें क्या आनंद आता है? सिनेमा में तो आनंद मिलता होगा न?

प्रश्नकर्ता : वह तो बाहर निकलते ही, थे वैसे के वैसे ही हो जाते हैं।

दादाश्री : था, वैसे का वैसे ही। कहेगा अट्टारह रुपये खर्च हो गए, बल्कि झंझट हो गई। तीन घंटे का समय खो दिया आत्मा का। मनुष्य जन्म के तीन घंटे बिगाड़ने चाहिए?

प्रश्नकर्ता : और दूसरे आगे-पीछे का समय

भी तो बिगाड़ता है न फिर! तीन घंटे तो गए और आगे-पीछे का समय तैयारियों में चला जाता है।

दादाश्री : हाँ, वह अलग से। वह समय अलग। लोगों से मैं पूछता हूँ, 'जब चिंता होती है तब क्या करते हो?' तब कहते हैं 'सिनेमा में चला जाता हूँ।' अरे भाई, यह सही उपाय नहीं है। यह तो पेट्रोल डालकर अग्नि बुझाने जैसी बात है!

कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि 'मनुष्य व्यर्थ समय बिगाड़ रहे हैं।' कमाने के लिए नौकरी पर जाना अनर्थ नहीं कहलाता।

लोग शरीर पर बदबूदार कीचड़ कब मलते हैं? उन्हें जलन होती है तब। उसी तरह ये टी.वी., सिनेमा वगैरह बदबूदार कीचड़ जैसे हैं। उसमें से कुछ सार नहीं निकलता। हमें टी.वी. के प्रति कोई विरोध नहीं है। प्रत्येक चीज़ देखने की छूट होती है लेकिन एक तरफ पाँच बजकर दस मिनट पर टी.वी. कार्यक्रम हो और दूसरी ओर पाँच बजकर दस मिनट पर सत्संग हो, तो क्या पसंद करोगे? ग्यारह बजे परीक्षा हो और ग्यारह बजे भोजन करना हो तो क्या करोगे? ऐसी समझ होनी चाहिए न!

मोह स्पर्श नहीं करता ज्ञानी को

हमारे पास व्यवहार जागृति तो निरंतर होती है! कोई घड़ी की कंपनी मेरे पास से पैसे नहीं ले गई है। किसी रेडियोवाले की कंपनी मेरे पास से पैसे नहीं ले गई है। हमने तो बसाया ही नहीं। इन सबका अर्थ ही क्या है? 'मीनिंगलेस' है। और ये दूसरा सब रेडियो-टी.वी. प्रत्यक्ष पागलपन है, प्रत्यक्ष 'मेडनेस' है।

ये सब पागलपन कहाँ से घुस गया? इसमें सुनने का क्या है? लोग आमने-सामने बोलते हैं उससे सुनना है। जीवित हैं उसका सुनना चाहिए, इन मरे हुआँ का क्या सुनना?

मुझे तो बल्कि फ्रेंड सर्कल क्या कहते हैं?

‘यह रेडियो सुनना चाहिए।’ मैंने कहा, ‘इस रेडियो सुनने में तो मेरा टाइम बिगड़ेगा। वह सब मुझे नहीं पुसाएगा।’ क्या उनकी बात सूनूं? ये सब सुन-सुनकर तो ये कान तंग आ गए हैं, यह रेडियो वगैरह सब सुनकर! ये बजते हुए रेडियो नहीं देखे बाहर? उन्हें सुनकर तो अपने कान पक जाएँ। नहीं देखा क्या ऐसा? तो फिर यह नया रेडियो क्यों सुनें? इन बजते हुए रेडियो को सुनकर कान नहीं पक जाते? ‘अरे चंदू! तुझ में अक्कल नहीं है।’ ऐसे रेडियो सुनकर हम पक गए हैं न? तो क्या ये नए रेडियो कान में पड़ने दें!

अनुकरण के मोह से बढ़ा संसार

प्रश्नकर्ता : आजकल रेडियो तो घर-घर में है।

दादाश्री : वह अलग बात है। जहाँ ज्ञान ही नहीं हो वहाँ पर क्या होगा? वही मोह कहलाता है न! मोह किसे कहते हैं? गैरजरूरी ऐसी चीजें ले आए और जरूरत की चीजों में कसर करे, वही मोह कहलाता है।

कोई रेडियो ले आए तो वह भी रेडियो ले आता है। अरे भाई, सभी जगह रेडियो बजते हैं, बल्कि कान फूट जाते हैं। अगर मुंबई में ही रेडियो हो और यहाँ नहीं हो तो फिर एकाध लाना पड़ेगा। यह तो घर-घर में रेडियो है। बल्कि लोग इससे तंग आ गए हैं। रेडियो भी बंद हो गए।

प्रश्नकर्ता : मुझे यह वीडियो लाने का बहुत मोह हुआ था।

दादाश्री : हाँ, वह होगा, भरा हुआ मोह है न, इसलिए ले आना और फिर जब मोह खत्म हो जाए तो बेच देना। जो पैसे गए वे मोह के खाते में उधार।

प्रश्नकर्ता : शुरूआत में ऐसा बहुत देखा। बाद में बंद कर दिया। फिर अपने आप बंद हो गया।

दादाश्री : हाँ, वही। यह, वही भरा हुआ मोह है और वह निकल गया। अब नया मोह उत्पन्न नहीं

होगा। पुराना मोह है, यदि नया उत्पन्न होता तो आप छोड़ नहीं पाते।

संताप करवाए, ऐसा मोह किस काम का?

आपको पूरे दिन में कितनी बार घड़ी देखनी पड़ती है?

प्रश्नकर्ता : बीस-तीस बार।

दादाश्री : तो फिर यह घड़ी देखना, पचास-साठ सेकन्ड खा जाता है?

प्रश्नकर्ता : तो क्या घड़ी नहीं रखनी चाहिए?

दादाश्री : रखनी चाहिए। लेकिन यदि हम से आधा मील दूर कोई घड़ी रखता हो तो हमें रखनी पड़ेगी। लेकिन अभी तो रास्ते पर चलनेवाले से भी पूछ लें तो भी वह टाइम बता देगा। उनको फुरसत ही है, सभी फुरसतवाले। मेरी यह गणित आपको प्रिय है? जगह-जगह घड़ी है, इसलिए कितने बजे पूछने पर बल्कि वह खुश होकर टाइम बताता है, ‘मुझसे पूछा?’

घड़ियाँ भी, देखो इसलिए मैंने हाथ घड़ी नहीं खरीदी है। हाँ, घरमें रखनेवाली घड़ी लाए हैं। यह सब मेड़नेस है। घनचक्कर बनाने के कारखाने हैं।

जिस घड़ी ने मुझे परेशान किया, जिसे देखते ही घबरा जाए वह किस काम का? कई ऐसे हैं जो पढ़ते नहीं हैं और किताब को एक तरफ रखकर खेल में खोया हुआ हो और ऐसे में अचानक पिताजी को देखते ही घबरा जाता है, उसी तरह इस घड़ी को देखते ही घबराहट हो तो जाने दो ऐसी घड़ी से दूर रहो!

चित्त फ्रेक्चर होने से, ऐश्वर्य फ्रेक्चर हो जाता है

यह तो चित्त की परवशता है। चित्त फ्रेक्चर हो जाता है। यानी चित्त संपूर्ण रूप से एकाग्र रहे तो परमात्मा है और यदि फ्रेक्चर हो जाए तो फिर

दादावाणी

जानवर या मनुष्यपन में आ जाता है फिर ऐश्वर्य फ्रेक्चर हो जाता है। इसलिए जितने डाट लगा सकें उतने डाट तो लगा देने चाहिए या नहीं लगाने चाहिए? अतः जितना पानी लीकेज हो तो उतने डाट लगाने में हर्ज ही क्या है?

यह तो जो देखा उसी में चित्त फँस जाता है। इसमें फँस जाता है, उसमें फँस जाता है। जितनी भी नई चीजें देखे न, मोमबत्ती देखे न, वह कुछ नए प्रकार की दिखाई दी, तो फिर चित्त उसमें फँस जाता है। देखो उस तरफ कितनी सुंदर दीप मिनार है न! तो फिर उसमें चित्त फँस जाता है। चित्त फँसे तो ऐश्वर्य टूट जाता है और ऐश्वर्य टूटे तो जानवर बन जाता है।

चित्त इसमें से बिखर जाए तो फिर इंसान बेचित्त हो जाता है। चित्त सारा बिखर गया। मुंबई गया, इधर गया, उधर गया। सब जगह भटकता रहता है, चित्तवृत्तियाँ फैल जाने से बेचित्त हो जाता है। फिर हम पूछें कि 'क्या धंधा करते हो?' तब कहेगा 'मुझे समझ नहीं पड़ती।' होता है पैतालिस (४५) वर्ष का लेकिन ऐसा बोलता है। क्योंकि चित्त की सारी वृत्तियाँ फैल चुकी हैं, अतः बेचित्त हो गया।

प्रश्नकर्ता : यह चित्त जो बहुत भटकता रहता है, क्या वह मोह है?

दादाश्री : हाँ, मोह। वही मोह है।

सावधान रहो उस मोह से, जो हमें खुद को ही ठगे

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी (यह सारा मोह है फिर भी) हर एक क्षण उसे दादाजी के चरणों में रहने की शक्ति मिलती रहती है। उसे खुले आम जाहिर करें कि दादाजी, चित्त घूम रहा है उसे मैं देखता रहता हूँ। उसे आपके चरणों में आश्रय दीजिए। ऐसा निरंतर पाँच सौ बार कहता रहता हूँ।

दादाश्री : वह सब ठीक है। यह आपका

पुरुषार्थ ही काम करेगा। जितना पुरुषार्थ करोगे उतना ही आपके काम आएगा।

लेकिन अभी तो बहुत है। यह तो ऐसा है जैसे आधा कुँआ पानी से भरा हो, तो एक-एक गिलास से निकालने जाएँ तो कब अंत आएगा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन, निकाला तो जा सकता है न?

दादाश्री : हाँ, निकलता तो है। शीघ्रता से निकलने लगता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि कुँआ खाली हो गया। वर्ना आप तो आराम से सो जाते, जाकर?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं।

दादाश्री : अब ऐसा कोई मोह नहीं रहना चाहिए जो हमे ठगे। यह जो निश्चय करता है, उस निश्चयपन के साथ छल करे अथवा धोखा करे। ऐसा मोह नहीं होना चाहिए। और यदि मोह हो जाए तो ज्ञानीपुरुष के पास जाकर उसका परिच्छेदन करवा लेना चाहिए। वे फिर उसे समझाएँगे कि यह ऐसा है। ऊपर ऐसा दिखता है लेकिन अंदर ऐसा है।

बिखरी हुई हैं चित्तवृत्तियाँ तरह-तरह की चीजों में

मेरी चित्तवृत्ति मुझ में ही रहा करती हैं। आपकी बिखरी हुई हैं। क्या आपकी बिखरी हुई नहीं है? वैसे तात्विक दृष्टि से बस इतना ही फर्क है, ज्यादा लंबा फर्क नहीं है। यदि आप अपनी चित्तवृत्तियों को बिखरने नहीं दो तो धीरे-धीरे आप मेरे जैसे ही बन जाओगे।

इसे कहाँ-कहाँ बिखरने दिया है? कहीं अच्छी (उच्च कोटी की) घड़ी दिखी, लेकिन आज उसे खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं, ऐसी स्थिति में मन में बैठ जाएगा कि 'जब पैसे आएँगे तब यह घड़ी लेनी है।' तब से चित्तवृत्तियाँ वहाँ उस दुकान में ही रहेगी। रात होने पर भी वापस नहीं आती।

दादावाणी

यानी मेरा यह चित्त, मुझ में है और आपका आप में नहीं। यदि वह धीरे-धीरे, एक-एक अंश करके भी आप अगर बदलना शुरू करो, तो कोई परेशानी हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : चित्त सबसे ज़्यादा किसमें फँसता है? विषय में। जिनमें विषय नहीं होता, उनमें यह सब चलाया जा सकता है, उस समय। और दूसरा क्या है? आवश्यक चीज़ें। पेट में खाना तो चाहिए। वह खाना दाल-चावल या रोटी, जो चाहिए वह तो चाहिए, और क्या चाहिए? इतना आवश्यक कहलाता है। खाना-पीना, कपड़े वगैरह आवश्यक चीज़ें कहलाती हैं और यह अनावश्यक! जिनकी कोई ज़रूरत नहीं है।

यह चित्त बिखर गया है। वह घड़ी के बालचक्र (पेन्डुलम) की तरह हिलता-डुलता रहता है। हमारा चित्त किसी में है ही नहीं न! इस देह में भी नहीं है न! तब जाकर ऐसी वाणी निकलती है, तब सब निकलता है।

ज़रूरतों के अलावा, बाहर का मोह किस काम का?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, यहाँ अमरीका में तो सभी बड़े-बड़े स्टोरों में चीज़ें देखने के लिए जाते हैं। उसे विन्डो शॉपिंग कहा जाता है। तो फिर उससे क्या हमारा मोह बढ़ जाता है?

दादाश्री : बढ़ेगा ही न, ऐसी स्थिति में और क्या होगा? जब से शॉपिंग के लिए गया तभी से शॉपिंग में और चीज़ों में ही तन्मयाकार रहता है। अतः फिर खुद आत्मा में नहीं रह पाता। इससे भयंकर कर्म बंध जाते हैं। अतः शॉपिंग-वाँपिंग के लिए नहीं जाना चाहिए। ज़रूरत की चीज़ें ही लेनी चाहिए, बेकार की नहीं। ज़रूरत के अलावा बाहर का कुछ लेने का क्या काम है? उसी को मोह कहा

गया है, और उसी से कर्म बंधते हैं, ज़बरदस्त कर्म।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, उससे किस तरह के कर्म बंधते हैं?

दादाश्री : अरे, जानवर गति के भी बंधते और अन्य दूसरे भी बंधते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या हम वहाँ निर्लेप रह सकते हैं? जब इस प्रकार देखने जाएँ तब उससे निर्लेप रहा जा सकता है क्या?

दादाश्री : रहा ही जा सकता है न! अपने आप रहा जा सकता है! तू क्या नहीं रहता है अब?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन मुझे स्टोर में जाना पसंद नहीं है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन फिर भी तू रह पाता है या नहीं यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ।

दादाश्री : तुझे किसी चीज़ पर मोह होता ही नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, मैं जब स्टोर में जाता हूँ तो आधी बार तो वैसे के वैसे ही बाहर निकल आता हूँ।

दादाश्री : नहीं लेकिन तुझे दादा के सिवा और कुछ अच्छा ही नहीं लगता है न!

प्रश्नकर्ता : फीका लगता है। जब स्टोर में जाता हूँ तो फिर मुझे तब विचार आता है कि यह सब जो है, वह दो दिन के लिए ही तो नया है। फिर किसलिए उसे देखूँ?

दादाश्री : और काम का है ही नहीं वह। स्टोर तो बेचनेवाले और लेनेवालों के लिए काम का है। हमें उससे क्या लेना-देना? यदि हमें पेन्सिल की ज़रूरत हो तो ले आएँ। ज़रूरत नहीं हो तो बेकार है!

अहो! कैसी दशा है यह वीतराग की

ये लोग मेरे साथ क्या करते हैं? नीरू बहन से कहते हैं कि 'हम दादाजी को स्टोर में ले जाएँ।' कुछ लेने की इच्छा है? पूछते हैं। वे मुझे साइकल (व्हीलचेर) पर बिठाकर स्टोर के अंदर घुमाते हैं। लेकिन यह स्टोर मुझे आकृष्ट ही नहीं करता। मुझे ज़रूरत ही नहीं है। इस दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि जिसकी मुझे ज़रूरत हो। क्योंकि जिसे लक्ष्मी की ज़रूरत नहीं है, जिसे मान की ज़रूरत नहीं है, जिसे कीर्ति की ज़रूरत नहीं, जिसे सोने की ज़रूरत नहीं है, स्त्री का तो विचार ही नहीं आता। क्योंकि देह से अलग रहता हूँ पूरी तरह से। फिर क्या बाकी बचा वहाँ पर? वह स्टोर मुझे क्या आकर्षित करेगा? तेरे मन में तो वे भाव हैं न अभी तक! सभी पूरे कर लेना। पूरे कर लेने से मोह छूट जाएगा उनका।

प्रश्नकर्ता : कुछ भी आकृष्ट नहीं करे, मन ऐसा कब होगा?

दादाश्री : हो जाएगा न! एक बार अगर हम ज्ञान को समझ लें तो, हो जाएगा मन वैसा। 'हम कौन हैं,' इतना समझ लें तो हो जाएगा। वर्ना यह मन तो आगे-आगे मंडराता ही रहेगा।

जीने के लिए आवश्यक क्या है?

प्रश्नकर्ता : दुनिया में रहने के लिए तो दुनिया का करना ही पड़ेगा, वर्ना ये लोग तो कहेंगे कि बुद्ध हो।

दादाश्री : दुनिया में रहने के लिए भोजन, साँस लेना, कपड़-वपड़े और मकान इतना ही आवश्यक है। अन्य चीज़ें आवश्यक नहीं है। संडास (पाखाने) की बहुत आवश्यकता है। यदि संडास नहीं होंगे तो आपको पता चल जाएगा। अगर सरकार ऐसा कानून बना दे कि पंद्रह दिन तक कोई भी संडास नहीं जाएगा। तब सरकार से कहेंगे, 'आप

कहो उतना टैक्स भर देंगे, लेकिन हमें संडास जाने दो। अब जिसकी इतनी अधिक महत्ता है फिर भी लोगों को कीमत नहीं है!

मन के चलते फँस गया मोह में

अब फाइनली, मैं इस मन के कहे अनुसार चलता हूँ तो उससे छुटने के लिए क्या करूँ?

दादाश्री : करने का कुछ होता होगा क्या वहाँ?

प्रश्नकर्ता : कुछ स्टेप तो लेने पड़ेंगे न

दादाश्री : किस चीज़ के स्टेप लेने हैं? इसे तो समझना है। समझकर गलत ठहरा देना है। अपना जो अनिश्चय है उसे क्रोस कर देना और निश्चय को स्वीकार कर लेना।

लेकिन उसके बावजूद भी हम कहते हैं कि 'भाई, अभी तक मन अगर सही चीज़ के लिए उछल-कूद कर रहा हो तो कर। हम लेट गो कर लेंगे कि भाई यह सही चीज़ है। ये गाने वगैरह सुनना कोई सही चीज़ नहीं है। यह खाना, वह सही चीज़ है। तो उसे हम लेट गो कर लेते हैं। नींद सही चीज़ है, तो उसे हम लेट गो कर लेंगे कि भाई चार एक घंटों तक सो जाना या पाँच-छः घंटे सो जाना। ये जो पतंग उड़ाना है उसकी कितनी ज़रूरत है? कितने ही लोग, जिन्हें ज्ञान नहीं है वे कहते हैं कि इसकी क्या ज़रूरत है? यह तो बिना बात की अनावश्यक पीड़ा है!

मन के कहे अनुसार चलना अर्थात् मिकेनिकल। ये जो बुद्धिजीवी हैं वे मन के कहे अनुसार नहीं चलते, बुद्धि के कहे अनुसार चलते हैं। लेकिन वह भी गलत है। अंत में वह बुद्ध बनती है।

अपने पुरुष (आत्मा) बनने के बाद, पुरुष और प्रकृति दोनों के जुदा हो जाने के बाद, निश्चय नहीं होगा तो फिर वह किस काम का? और मन तो 'रिलेटिव' में गया, उसे तो स्वीकार ही नहीं करना चाहिए न!

आवश्यक क्या है? और अनावश्यक क्या है?

पूरा जगत् 'अन्नेसेसरी' परिग्रह के सागर में डूब गया है। ये लोग बगैर ज़रूरत की चीज़ें बढ़ाते हैं। भगवान कहते हैं कि यदि तुम्हें मोक्ष में जाना हो तो कम परिग्रह रखना। 'नेसेसरी' को भगवान परिग्रह नहीं कहते हैं। इसलिए हर एक को खुद की नेसेसिटी कितनी है, यह निश्चित कर लेना चाहिए।

मनुष्य में आवश्यक चीज़ों की ज़रूरत है, जो आवश्यक कहलाती है। आवश्यक यानी जिसके बगैर चले ही नहीं। अनावश्यक कितना होगा?

प्रश्नकर्ता : बहुत अधिक।

दादाश्री : यह सारा टाइम अनावश्यक के लिए है। आवश्यक तो 'फ्री ऑफ कॉस्ट' होता है। ये अनावश्यक ही सारा टाइम खा जाता है। जिनके लिए मेन्टेनन्स करना पड़ता है, ऐसा कुछ भी करना पड़ता है, वह सब अनावश्यक। क्या-क्या आवश्यक है?

प्रश्नकर्ता : खाना-पीना, कपड़ा, दवाई, पानी वगैरह।

दादाश्री : इस देह को मुख्यतः किस चीज़ की ज़रूरत है? मुख्य तो हवा की। वह उसे हर क्षण फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती ही रहती है।

कुदरत हवा-पानी तो फ्री देते हैं। इस दुनिया में सबसे मँहगी चीज़ है तो वह है हवा। जो अगर पाँच मिनट भी नहीं हो तो इंसान खत्म हो जाए और कुदरत ने वह 'फ्री ऑफ कॉस्ट' दी है। और वह तो सभी जगह, 'एनी प्लेस,' कहीं भी जाओ तो मिलती है वह! कुदरत ने कितनी सेफसाइड कर दी है! तू संडास में जा या कहीं भी जाए फिर भी वह मिल जाती है और दूसरा है पानी। वह भी 'फ्री ऑफ कॉस्ट' दिया है। पानी के लिए बहुत हुआ तो कहीं-कहीं उसकी ज़रूरत पड़ती है और फिर वह भी बिना मेहनत के ही चाहिए, अगर ऐसा हो तो पैसा दे देना, तो तुझे पानी मिल जाएगा।

दूसरी ज़रूरत खाने की है। 'फूड' भी सस्ता। नहीं खाएँ तो क्या होगा? मनुष्यपना व्यर्थ जाएगा। इसलिए ऐसा कुछ नहीं कि फिल-हाल तू पूरनपूड़ी और ऐसा सब खा। जो कुछ भी खिचड़ी अथवा दाल-चावल हों लेकिन आवश्यक हैं, उनके लिए हमें परवश रहना था। किसके लिए? आवश्यक।

भूख लगी यानी क्या कि फायर हुआ, इसीलिए उसे बुझाओ। इस फायर को बुझाने के लिए क्या चाहिए? तब ये लोग कहते हैं कि 'श्रीखंड, बासुंदी!' अरे नहीं, जो हो वह डाल दे न अंदर। खिचड़ी-कढ़ी डाली हो तब भी वह बुझ जाती है।

अब खाना खाया यानी कुछ खा लेने मात्र से केवल काम चलेगा? वापस उसका परिणाम आएगा, रिज़ल्ट तो आएगा या नहीं? जो कुछ करो उसका। क्या परिणाम आएगा? जो खाया हो उसका?

प्रश्नकर्ता : संडास जाना पड़ेगा!

दादाश्री : फिर पानी पिया तो? बाथरूम के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। साँस ली तो उच्छ्वास भी होगा। लेकिन इसकी ज़रूरत है। साँस नहीं ली तो भी नुकसान, पानी नहीं पीएँ तो भी नुकसान। ये सभी आवश्यक चीज़ें हैं।

लोग शोर मचाते रहते हैं कि 'गुड़ मिलता नहीं, चीनी मिलती नहीं।' खाने की चीज़ों के लिए क्या शोर मचाना चाहिए? खाने की चीज़ों को तो तुच्छ माना गया है। खाने का तो, पेट है तो मिल ही जाता है। दाँत है उतने कौर मिल ही जाते हैं। दाँत भी कैसे हैं! चीरने के, फाड़ने के, चबाने के, अलग-अलग। कितनी अच्छी हैं ये आँखें? करोड़ रुपए दें तब भी क्या ऐसी आँखें मिलेंगी? नहीं मिलेंगी।

फिर सेकन्डरी स्टेज की ज़रूरत में पहनना है कपड़ा भी आवश्यक है। क्या होगा ठंड के दिनों में? क्योंकि इंसान इन सभी ऋतुओं (मौसम) के अधीन है। ये सभी ऋतुएँ (मौसम) इन इंसानों की खुद की

प्रकृति के अधीन नहीं रहती। कुछ लोग सर्दी के दिनों में गरम कपड़ों के बगैर रह सकते हैं, जबकि गर्मी में उनसे नहीं रहा जा सकता। ऐसा होता है न? यानी कुछ भी कपड़ा चाहिए। लेकिन कपड़ा कैसा होना चाहिए? खादी का हो, अन्य हो, चाहे जैसा हो, कम कीमत का और हमारा शरीर ढक दे, उतना होना चाहिए। दो कपड़े चाहिए, उसमें तो कितना हंगामा कर दिया!

चौथी आवश्यकता है नींद। ज़रा ठंडक चाहिए। छोटा छप्पर चाहिए, घास का या कैसा भी। और एकाध बिछाने के लिए ज़रा चटाई और ओढ़ने के लिए कुछ चाहिए। बस, इतना ही? और क्या चाहिए?

अंतरसुख घटाए, अन्नेसेसरी मोह

अतः जितना आवश्यकता अनुसार है उतना यदि समझ ले तो, मनुष्य को किसी भी प्रकार का दुःख नहीं है। इन जानवरों को भी दुःख नहीं है तो फिर मनुष्य को दुःख रहना चाहिए?

यह तो अनावश्यक को बढ़ाता रहता है। स्लेब किया सो किया किन्तु ऊपर से मेंग्लोरी खपरैल से ढक दिया। ज़्यादा बढ़ाते हैं या नहीं? आपने थोड़ा बहुत बढ़ाया है क्या? फिर बाद में शिकायत करता है, 'या खुदा परवरदिगार! फँस गया।' अरे भाई, तूने बढ़ाया है तो फिर उसमें खुदा क्या करेगा? हम अनावश्यक चीज़ें बढ़ाएँ तो उसमें खुदा क्या करे बेचारा? आपको कैसा लगता है? बोलते क्यों नहीं? हम अनावश्यक ज़रूरतें बढ़ाते हैं और फिर खुदा का नाम दें कि हे खुदा! मैं फँस गया!

ये संसारी साधन ही बंधन हो गए हैं, इसके बावजूद कुछ साधन ऐसे होते हैं कि जो आवश्यक हैं। उन साधनों को हटाना नहीं है। क्योंकि वे अवश्य होने ही चाहिए, लेकिन उनकी मात्रा हमें समझ लेनी चाहिए।

एक दिन यदि नल में चीनी डाला हुआ पानी आए तो लोग ऊब जाएँ। अरे! ऊब गए? तब कहेगा,

हाँ, हमें तो सादा पानी ही चाहिए।' ऐसा यदि हो न तो उसे सच्चे की क्रीमत समझ में आए। ये लोग तो फेन्टा और कोकाकोला खोजते हैं। अरे, तुझे किसकी ज़रूरत है वह जान ले न! शुद्ध हवा, शुद्ध पानी और रात को खिचड़ी मिल गई तो फिर क्या यह देह शोर मचाता है? नहीं मचाता। इसलिए ज़रूरतें क्या है, इतना निश्चित कर लो। जबकि ये लोग खास प्रकार की आइस्क्रीम ढूँढ़ेंगे।

कबीर साहब क्या कहते हैं?

'तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी फ़ेल।'

'अन्नेसेसरी' के लिए बेकार ही भागदौड़ करता है, वही 'फ़ेल' कहलाता है। तू हिन्दुस्तान में रहता है और नहाने के लिए पानी माँगे तो हम उसे फ़ेल नहीं कहेंगे?

'अपने फ़ेल मिटा दे, फिर गली-गली में फिर।'

कितनी ज़रूरतें हैं इस देह की? शुद्ध घी, दूध चाहिए। जबकि वे शुद्ध नहीं देते और पेट में कचरा डालते हैं। वह फ़ेल किस काम का? ये सिर में क्या डालते हैं? शैम्पू, साबुन जैसा नहीं दिखता और पानी जैसा दिखता है, ऐसा सिर में डालेंगे। इन अक्ल के खज़ानो ने ऐसी खोज की कि जो फ़ेल नहीं थे वे भी फ़ेल हो गए! इससे अंतरसुख कम हो गया! भगवान ने क्या कहा था कि 'बाह्यसुख और अंतरसुख के बीच में पाँच-दस प्रतिशत का फ़र्क होगा तो चलेगा,' लेकिन यदि यह नब्बे प्रतिशत का फ़र्क हो तब तो नहीं चलेगा। इतना बड़ा होने के बाद फिर वह फ़ेल होता है, मरना पड़ेगा। लेकिन ऐसे नहीं मरा जाता और सहन करना पड़ता है। ये तो केवल फ़ेल ही हैं, 'अन्नेसेसरी' ज़रूरतें खड़ी कर रखी हैं।

एक घंटा बाज़ार बंद हो जाए तो लोगों को चिंता हो जाती है! अरे, क्या चाहिए तुझे जो चिंता होने लगी? तो कहे कि मुझे ज़रा आइस्क्रीम चाहिए, सिगरेट चाहिए। यह तो फ़ेल को ही बढ़ाया न? यह

अंदर सुख नहीं है, इसीलिए लोग बाहर ढूंढते रहते हैं। भीतर अंतरसुख की जो सिलक थी, वह भी आज चली गई है। अंतरसुख का बैलेन्स मत तोड़ना। यह तो जैसे अच्छा लगे वैसे सिलक (राहखर्च, पूँजी) खर्च कर डाली, तो फिर अंतरसुख का बैलेन्स ही किस तरह रहेगा?

हटा दो भाव अनावश्यक पर से

इसलिए इस संसार में कौन सी चीजें आवश्यक है और कौन-कौन सी चीजें अनावश्यक हैं, वह निश्चित(नक्की) कर लेना चाहिए। आवश्यक यानी जिसकी अवश्य जरूरत पड़ेगी ही और अनावश्यक तो मोह की वजह से सिर पर उठाया है। अब अनावश्यक तो कम हो सके ऐसे हैं भी नहीं। कोई कहेगा, मुझे कम करना है लेकिन होते नहीं है। बच्चों की बहुएँ शिकायत करती हैं, घर में पत्नी किच-किच करती रहती है। लेकिन मन में इतना भाव रहा करे कि मुझे कम करना है। यदि इतना भाव रहे तो भी बहुत हो गया।

ऐसा है न! जिंदगी में हमें आवश्यक और अनावश्यक, दोनों चीजों की लिस्ट बनानी चाहिए। अपने घर में हर एक चीज देख लेनी चाहिए कि इसमें अनावश्यक कितनी हैं और आवश्यक कितनी। अनावश्यक चीजों पर से भाव हटा देना चाहिए और आवश्यक के प्रति तो भाव रखना ही पड़ेगा और कोई चारा ही नहीं है न!

जितना ज्यादा अनावश्यक उतनी उपाधि (बाहर से आनेवाला दुःख) ज्यादा। आवश्यक भी उपाधि ही है लेकिन फिर भी उपाधि नहीं मानी जाती, क्योंकि जरूरत है, इसलिए। मगर अनावश्यक, वह सब भी उपाधि है।

क्या नियम है आवश्यक का?

एक जर्मीदार मेरे पास आया और मुझसे पूछने लगा कि 'जीवन जीने के लिए कितना चाहिए? मेरी

हज़ार बीघा जमीन है, बंगला है, दो कारें हैं और बैंक बैलेन्स भी खासा है, इसमें से मुझे कितना रखना चाहिए?' मैंने कहा, 'देख भाई प्रत्येक की जरूरत कितनी होनी चाहिए, इसका ख्याल इस पर से आता है कि उसके जन्म के समय कितना वैभव था। इसके आधार पर तू सारी जिंदगी का प्रमाण तय करना। दरअसल, यही नियम है।' बाकी तो सब एक्सेस में जाता है और एक्सेस तो ज़हर है, मर जाएगा।

कुदरत का नियम ऐसा है कि हर एक को उसकी जरूरत के अनुसार सुख आ ही मिलता है। हर किसी का भरा हुआ 'टेन्डर' पूरा होता ही है। जो-जो जरूरतें हैं, वे सब घर बैठे हाज़िर हो जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : अभी इन संयोगों में हैं और सभी चीजें आवश्यक से बहुत अधिक हैं अभी। वहाँ तक यानी आवश्यक स्थिति तक पहुँचने का रास्ता कौन सा है? ऐसा कौन सा रास्ता है?

दादाश्री : जैसे-जैसे यह कम होता जाएगा वैसे-वैसे। जितना बढ़ाएँगे उतनी देर होगी। कम करते जाएँगे तो शीघ्रता से होगा।

प्रश्नकर्ता : कम करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तुझे शादी नहीं करनी है तो क्या कम नहीं होगा? और जिसे शादी करनी हो उसे?

प्रश्नकर्ता : बढ़ जाएगा।

दादाश्री : हाँ, तो बस। कुछ निश्चय तो होना चाहिए न? सब योजनाबद्ध होगा या यों ही गप्य होगा? मोक्ष में जाना है तो योजनाबद्ध ही होना चाहिए न?

अनावश्यक के सामने जरूरत है अंदर की जागृति की

प्रश्नकर्ता : इन बाहर की चीजों को कम करने के लिए अंदर की जागृति कैसी होनी चाहिए?

दादाश्री : अंदर की जागृति ऐसी होनी चाहिए कि वे चीजें उसे दुःखःदायी लगती रहें।

प्रश्नकर्ता : अब तो आपने बताया कि आवश्यक चीजों के अलावा बाकी सभी चीजें जितनी हटा सकें उतनी हटा देनी चाहिए, ऐसा ही हुआ न?

दादाश्री : हाँ, ये सभी नहीं होनी चाहिए। यदि गले पड़ी हों, तो कैसे उन्हें धीरे-धीरे छोड़ा जा सके, ऐसी कोशिश में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी इस तरह छोड़ देना, वह किसमें आता है? ये चीजें नहीं होनी चाहिए कहा न?

दादाश्री : छोड़ देना, यानी इसमें शब्दों को नहीं तौलना है। यह तो, अंदर ही अंदर हमें समझ लेना चाहिए कि इससे कब छुटकारा होगा? खुद को अहितकारी लगेगा, तो तुरंत छोड़ देगा। देखो न, शादी की बात पर मना कर देता है, साफसाफ।

प्रश्नकर्ता : कोई चीज़ खुद को अहितकारी लगे ऐसा सभी मामलों में पता चलना चाहिए।

दादाश्री : सभी में लगेगा तभी दिन बदलेंगे न! अभी तो अन्य चीजों में इन्टरेस्ट है न। आपको शादी करने में इन्टरेस्ट नहीं है तो साफ कह देते हो न कि 'मेरा नहीं है' बाहर के संयोग आ जाएँ तो भी फेंक देते हो, ऐसा सब होना चाहिए न?

परिग्रह-अपरिग्रह, है मात्र डिस्चार्ज

बात को समझना है। अब अपना व्यवहार रहा छोटा! अब उसमें तो पूरी दुनिया के साथ व्यवहार रखते हैं। क्योंकि जब तक उसने अभी लिमिट नहीं बनाई है, तब तक क्या हो सकता है? इसलिए जैन शास्त्र लिमिट बना देते हैं कि 'भाई, तुझे ज्ञान नहीं हो तो लिमिट रखना कि इतनी हद से बाहर मुझे नहीं निकलना है। ताकि उतने में से ही तेरा हिसाब बँधे। वर्ना पूरी दुनिया में फैलाव रहेगा, जबकि अपनी तो यह लिमिट आ गई। डिस्चार्ज की लिमिट आ गई है कि 'इतना ही।'

प्रश्नकर्ता : बस, यह पूर्व के जो बाकी हैं, वही।

दादाश्री : हाँ, उन परमाणुओं का निकाल करना है।

प्रश्नकर्ता : तो इन परिग्रहों को कम करना, वह लिमिट है या परिग्रह की सीमा तय करना?

दादाश्री : सबकुछ डिस्चार्ज है। परिग्रह बढ़ाना वह भी डिस्चार्ज और परिग्रह की सीमा तय करना वह भी डिस्चार्ज और अपरिग्रही रहना वह भी डिस्चार्ज। क्योंकि अपरिग्रही रहने का जो भाव किया था, इसलिए अपरिग्रहता आई है। लेकिन वह भी डिस्चार्ज है, वह भी छोड़ देना पड़ेगा। वह भी वहाँ मोक्ष में साथ नहीं आता। वह तो जिस स्टेशन पर वह हेल्प कर सकता है उस स्टेशन पर हेल्प करेगा। इस स्टेशन पर कोई चीज़ हेल्प नहीं करेगी। इस स्टेशन पर तो तुझे उसका निवेड़ा लाना है। उन सभी को सोल्व कर देना है।

अनुकूलता बना देती है आराम पसंद

हमें तो अब उपाधिकम करनी है, जितनी बन पड़े उतनी। ये जो हमारी पाँच आज्ञा हैं न, वे उपाधि रहने दें, ऐसी हैं ही नहीं। उसमें कुछ उपाधिवाला है ही नहीं। इसमें तो पंखे का अपने आप पर अनुभव लिया है कि मेरा क्या है कि मैं पहले पंखा नहीं रखता था। छप्पन साल की उम्र तक तितिक्षा नामक गुण विकसित किया था। एक दरी पर सोया करता था हमेशा और पंखा नहीं चलाता था। सारा मित्रमंडल आता था। वे कहते थे कि आप पंखा नहीं रखते, क्योंकि आप तो तपस्वी पुरुष हैं, लेकिन हमारा क्या होगा? तब मैंने कहा, 'चला दो' ऐसा करने से बाद में आराम पसंद हो गया यह शरीर।

एक किसान रोज़ाना जूते पहनता हो, तो बाद में जब जूते नहीं हों, तब उसके पैर जलने लगते हैं। वर्ना शरीर ऐसा हो जाता है कि जले ही नहीं।

इसलिए अब आराम पसंद हो गए हैं तो परवश होना पड़ता है। जब पंखा नहीं हो तो परवश होना पड़ता है और मुझे उपयोग बाहर रखना पड़े, यह परेशानी होती है। मेरे साथ क्या हुआ था, अपनी वह बात बता रहा हूँ। मतलब इस बात को समझना। पंखा बंद मत करना, लेकिन यह पंखा हितकारी नहीं है, ऐसा मानना।

हमारे महात्माओं के लिए यह अनुभव हितकारी नहीं है। बाहर के लोगों से तो हम कह नहीं सकते। बाहर के लोग बाह्य सुख खोज रहे हैं और आप आंतरिक सुख खोज रहे हो, सनातन सुख खोज रहे हो। इसलिए यह तो मेरे अनुभव के बारे में बताया।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ पंखा ही क्यों? बहुत-सी चीजें हितकारी नहीं हैं।

दादाश्री : दूसरी चीजें नहीं देखनी हैं, सिर्फ यह पंखा ही ज्यादा है! दूसरी चीजें तो आपको डायरेक्ट स्पर्श नहीं करतीं। दूसरी चीजों में हर्ज नहीं है। दूसरी तो, घर के लोग फ्रिज लाएँ तो उसमें आपका क्या नुकसान? वे कहें कि यह बर्फ का पानी पीजिए, तो आपको अगर वह नहीं पीना हो तो मना कर सकते हैं। घर के लोग रेडियो, फोन इस्तेमाल करें तो उसमें आपको क्या लेना-देना? सिर्फ यह पंखा ही ऐसी चीज है कि खुद को स्पर्श करता है।

जिन्हें किसी बाह्य उपाधि की जरूरत नहीं है और फिर भी यदि करें तो हमें हर्ज भी नहीं है। अपना मार्ग कैसा है कि आपत्ति रहित मार्ग है। वे तो जहाँ मानते हैं वहीं है और वे कहेंगे, 'हवा के बिना नहीं रहा जा सकता।' हम कहें, 'ठीक है ऐसा ही होता है। हो सके तो पंखा लाना' ऐसा कहना चाहिए हमें। जिन्हें जो चाहिए, उन्हें उसी चीज की जरूरत है।

प्रश्नकर्ता : आराम पसंद नहीं बनना है, ऐसा कहा आपने?

दादाश्री : बाहर की सुविधाओं की वजह से आराम पसंद हो जाते हैं लोग। फिर जब सुविधा नहीं होती तब परेशान होते हैं। इस शरीर को तो आप जैसा रखो न, वैसे ही रहने को तैयार हो जाता है।

नेसेसिटी नहीं है, यह तो जान बूझकर आदत डाली है हमने। पंखे की उल्टी आदत डाली। उससे बल्कि ठंडा हो गया मैं, उसके बाद! यह तो कोई तरीका है? और अहमदाबाद जाते हैं तब एयरकन्डिशन चलाते हैं। कहते हैं, 'दादाजी, मेरे यहाँ ठहरनेवाले है।' वे लोग एयरकन्डिशन लगा देते हैं। उन्हें पता नहीं कि मुझे एयरकन्डिशन की जरूरत नहीं है। मुझे तो ऐसा एयरकन्डिशन चाहिए कि 'तेरे घर में एयरकन्डिशन है लेकिन फिर सत्संग में जाते हुए वहाँ तक एयरकन्डिशन हो, ऐसा चाहिए।' जबकि वहाँ तो बाहर निकले कि फिर धधकता...। आप ठंडक में से बाहर निकलें तो क्या होता है बाहर? धधकते अंगारों जैसा लगता है। यह क्या है? इसलिए भगवान ने कहा था कि आराम पसंद मत बनना। इसे आराम पसंद कहते हैं।

अब अंदर का सुख मिल जाने के बाद...

कुछ तो इस शरीर को सिखाना चाहिए ना!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यह शरीर बाह्य सुख खोजता है न?

दादाश्री : लेकिन हमें सुख नहीं खोजना है। हमें अंदर का सुख मिला है। जिसे नहीं मिला हो वह बाहर का खोजेगा। जिसे अंदर का मिला हो, उसे यह बाहरवाला नहीं होगा तो चलेगा या नहीं चलेगा? जिसे अंदर का नहीं मिला हो, उनसे हम नहीं कहते। नहीं मिला वे क्या करेंगे? लेकिन यहाँ तो बाहर व्यर्थ ही हाथ-पैर मारता है। कुछ लोग ऐसे तो राह देखते हैं, 'ओ, हवा आई, आई, यह आई, यह आई' यदि चला जानेवाला नहीं है, तो भोग ले, लेकिन कहते हैं 'वह चला गया'

मोक्ष में जानेवाले को पराधीनता कैसे पुसाए?

इस तरह की परवशता मनुष्य में रहती है। देखो भगवान ने ये बाईस प्रकार के परिषह सहन करने को कहा है। लिखा है या नहीं लिखा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, परिषह सहन करने के लिए कहा है।

दादाश्री : हाँ, वैसा तो मैं आपको कहता ही नहीं हूँ। ऐसा कहूँ तो आप सभी घबरा जाएँ, उसके बजाय नहीं कहूँ वह अच्छा है। आपको तो केवल इतना ही कि, ज़रा ऐसा रहेगा तो आपका उपयोग अंदर रहेगा। वर्ना उपयोग फिर बाहर का बाहर ही भटकता रहेगा। ज़रा-सी उमस हुई नहीं कि उपयोग बाहर ही रहा करेगा। इसके बावजूद भी अगर पंखा अपने आप चल रहा हो न तो उसे बंद मत करना। हो सके तो समभाव से निकाल कर देना, लेकिन इसमें सुख है ऐसा मत मानना। इसमें सुख है ऐसा माना मतलब उसमें दुःख है ऐसा माना। इससे उपयोग दूसरी जगह में घूमता रहेगा।

एयरकन्डिशन में से बाहर निकले हुए व्यक्ति की क्या स्थिति होगी, यह बताओ। पंखे-वंधे की यह खोज तो किसने की थी? इन फॉरिनवालों ने। उनके लिए की जानेवाली खोजबीन, अपने यहाँ कैसे घुस गई। वर्ना अपने यहाँ तो राजाओं के यहाँ पंखे होते थे। दूसरी सब जगह तो सामान्य पंखे होते थे, साधारण। वह भी अगर सेठ हो, तो! वर्ना अगर काम कर रहा हो पूरा दिन तो काहे का पंखा चाहिए? और कुदरत तो हर तरह से आपकी हेल्प कर ही रही है। जब हवा की ज़रूरत हो तो धीरे-से हवा भी आती है, बाकी सब हेल्प करती है और पसीना जितना निकलना चाहिए उतना निकलने देती है। फिर अकुदरती जीवन जीने का क्या मतलब? यह कोई धर्म के बारे में बातचीत नहीं हैं। यह तो सिर्फ समझने के लिए।

पंखे को पाव-आधा घंटा बंद करके और उपयोग में रहकर देखो, तो आपको पंखे की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जो उपयोग में रहता हो, उसे पंखे की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। पंखे की ज़रूरत तो जब तक बाह्य होता है न तभी तक। और इसके बावजूद भी हम मना नहीं करते। भले ही तेरा बाह्य हो न, तो भी तू बाह्य में और 'मैं शुद्धात्मा में हूँ' ऐसा भान रहेगा तो बहुत हो गया। तो भी हर्ज नहीं है, लेकिन थोड़ा आगे बढ़ने में हर्ज क्या है? हर्ज है क्या?

मोह यानी आफतों का संग्रहस्थान

प्रश्नकर्ता : घर में जो भी कुछ चीज़ें होती हैं, वे जब बिगड़ जाती हैं, तब पूरी जान उसी में रहती है। मेरी बात करूँ तो सत्तर साल की उम्र तक फ्रिज का पता तक नहीं था। बाद में फ्रिज आया। एक दिन वह बिगड़ गया तो पूरा घर ऊपर-नीचे कर डाला।

दादाश्री : हाँ, वह तो ऐसा ही होता है। ये सभी आफते हैं। *उपाधि* चीज़ अलग है और आफत चीज़ अलग है। *उपाधि* तो लिपटी रहती है और आफत मोल ली हुई होती है। आपको होना स्वाभाविक है। ये सब तो आफतें हैं।

ज्ञान नहीं था तब जब हीराबा कहतीं कि, 'वह नल बिगड़ गया है,' तो वह मेरे लिए *उपाधि*। फिर बुलाने जाना, ले आना, वह *उपाधि*। वह ज़रूरत की चीज़ रही न? लेकिन यह तो गैरज़रूरत आफतें। टी.वी. लाते हैं, फलॉ लाते हैं, क्या कुछ कम लाते हैं लोग? आँखें बिगड़ती हैं और फिर आफत।

प्रश्नकर्ता : यह टी.वी. एन टाइम पर बिगड़ जाए तो आस-पासवाले सभी लोग पूछते हैं 'टी.वी. नहीं चल रहा?' टी.वी. नहीं चले तो आत्मा-वात्मा सब उसी में।

दादाश्री : हाँ, सब उसी में। अब इसके बावजूद भी हमारे से उसका तिरस्कार तो होना ही

नहीं चाहिए न? क्योंकि वह दूसरों को अच्छा लगता है। वे चाहें सो करें। अपने घर का लड़का भी अगर कुछ भी कर रहा हो, तो भी क्या हम मना कर सकते हैं? मना करोगे तो आपको द्वेष होगा।

उपयोगवाले को कुछ भी अड़चन नहीं होती

और जब उपयोग में हो तब कुछ रहता नहीं है। जब उपयोग में हों तब ख्याल ही नहीं रहता कि यह गरमी है या ठंडी है, ऐसा कुछ भी नहीं। अभी लड़का परीक्षा में पेपर लिखता हो और पंखे बंद हो गए हों, तो उसे पता भी नहीं चलता। वकीलों का जो कामकाज चलता हो और जज बराबर सुनते हैं, उस घड़ी में पंखे बंद हो गए हो न तो पता तक नहीं रहता। यह तो खाली बैठा नहीं कि पता चला। उसे बाह्य उपयोग कहते हैं। भटक, भटक, भटक किया करे। इसके बावजूद मैं तो कहूँ कि कोई हर्ज नहीं। इतना भी कुछ करना। पाँच आज़ा में रहते हैं न? पंखे घुमाना लेकिन पाँच आज़ा में रहना। लेकिन यह जानकर रखना कि यह चीज़ भूलवाली है। मैं भी पंखा नहीं चलाता ऐसा नहीं है, मैं भी चलाता हूँ यह। अब उसमें से थोड़ा कम करते करते फिर मूल जगह पर आ सकता है।

अब यह बूट पहनकर घूमते हैं और बाद में एक दिन कभी बूट रास्ते में किसी लूटेरे ने ले लिए और फिर धूप में वैसे ही रोड और रेत पर चलना पड़ा तो क्या दशा होगी? अब किसानों के जो पैर हैं न, वह फिट (वातावरण के अनुरूप) ही हो जाते हैं। उन्हें तो कुछ होता भी नहीं और ज़रूरत भी नहीं। कुदरत का नियम है कि जिन्हें जितना जो चाहिए न, वह फीट हो ही जाए। तो फिर हम उस नियम का लाभ क्यों नहीं उठाए? कुदरत का नियम ही ऐसा। क्योंकि आप स्वतंत्र है। कुदरत आपके अधीन है। आप कुदरत के राइट बिगाड़ते हैं।

बातें ही समझनी हैं कि इस रास्ते पर ऐसा है और इस रास्ते पर ऐसा है। फिर निश्चित करना है कि

कौन-से रास्ते जाना चाहिए! नहीं समझ में आए तो 'दादा' से पूछना। तब दादा आपको बताएँगे कि ये तीन रास्ते जोखिमवाले हैं और यह रास्ता बिना जोखिम का है, उस रास्ते पर हमारे आशीर्वाद लेकर चलना।

निश्चय के सहारे बढ़ा जा सकता है आगे

प्रश्नकर्ता : यह चित्तवृत्ति जो बिखर जाती है, उसका आधार क्या है? क्यों बिखर जाती है?

दादाश्री : निश्चय पूरा ही नक्की किए बिना है और लोगों के कहे अनुसार खुद को चलाता है। इसलिए जिसमें लोगों ने सुख माना उसी में खुद मान लेता है कि बंगले के बगैर तो सुख मिलेगा ही नहीं। अरे, खाना अच्छा नहीं हो तो सुख महसूस नहीं हो सकता लेकिन बंगले का क्या करना है रे? यदि हर रोज़ लड्डू खाने को मिलें तो क्या बंगले की ज़रूरत है?

प्रश्नकर्ता : तो क्या लोकसंज्ञा चित्तवृत्ति को बिखरने में हेल्प करती है?

दादाश्री : लोकसंज्ञा से ही! धोबी को पैसे दे देते हैं, यह क्या कोई तरीका है? क्या हमारे बुजुर्गों ने धोबी को पैसा दिया था?

अतः सारी चित्तवृत्ति बिखर गई है। किसी और की ज़रूरत ही क्या है पूरे दिन? दो लड्डू (रोटी) और थोड़ी सी सब्जी मिल जाए तो क्या किसी और की ज़रूरत पड़ेगी। चिल्लाना पड़ेगा कि आपको फलाने चाचा यहाँ आईए, फलानी चाची यहाँ आईए? जितनी चित्तवृत्ति बिखर गई है, उसका हमें फल भुगतना पड़ता है। लेकिन क्योंकि अब हमने निश्चय किया है, इसलिए जो बिखरा हुआ है वह अब एक हो जाएगा। अपनी 'बिलीफ' इस तरफ एक होने लगी है। बस रात-दिन 'बिलीफ' कहाँ है यही देखते रहना है और उस 'बिलीफ' को सहारा देते रहना है और उस 'बिलीफ' को विटामिन देते रहना है।

फैली हुई हैं चित्तवृत्तियाँ, बिखरनी की इच्छा से

प्रश्नकर्ता : अब यह जो चित्तवृत्ति है, वह जगह-जगह बिखरे दी है या बिखर गई है?

दादाश्री : बिखर गई है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो अपने आप ही बिखर जाती है न?

दादाश्री : बिखरने की इच्छा है इसलिए बिखर गई है! अपनी इच्छा बिखरने की थी इसलिए बिखर गई।

प्रश्नकर्ता : यानी मूलतः तो बिखरने की इच्छा ही है न?

दादाश्री : हाँ, इच्छा है इसीलिए। वर्ना नहीं बिखरे। यह तो इच्छा है इसलिए फिर वहाँ ज़मीन में चित्त गया। ज़मीन में गया इसलिए वहाँ कॉर्ट में गया, फलाने में गया, किसान में गया, बैलों में गया, कपास में गया, इस प्रकार फिर बिखर जाता है। अब वहाँ पर यदि आवश्यक और अनावश्यक नक्की कर ले तो उसके बाद गाड़ी आगे चलेगी।

जहाँ-जहाँ चित्तवृत्तियाँ फैल गई हैं, जहाँ-जहाँ चित्तवृत्तियाँ बिखर गई हैं, वहाँ पर आत्मा बिखर गया। वे सभी चित्तवृत्तियाँ जब एक जगह पर आ जाएँ तो परमात्मा बन जाए।

जितना मोह ज़्यादा उतनी जलन ज़्यादा

इस काल की विचित्रता यह है कि कर्मों का बोझ इतना अधिक है कि जिनकी कोई सीमा नहीं है! खचाखच कर्म भरे हुए हैं और मोह ही ज़्यादा है। मोह ज़्यादा है इसलिए जलन भी ज़्यादा, अत्यधिक जलन है न!

प्रश्नकर्ता : एक तरफ जितना मोह है, उतनी ही जलन रहती है न?

दादाश्री : उतनी ही जलन। जिसे खाने से

तृप्त नहीं हुए, जो शौक करने से शौक बंद नहीं हुए, पूरे नहीं हुए, जिसे पहनने से मोह कम नहीं हुआ बल्कि मोह बढ़ता ही जाता है तो इससे जलती हुई मोहरूपी अग्नि बढ़ती ही जाती है।

प्रश्नकर्ता : शौक और मोह में क्या फर्क है?

दादाश्री : मोह यानी शराबी जैसी स्थिति और शौक तो जो शराब नहीं पीता हो उसे भी हो सकता है। शौक यानी खुद का खड़ा किया हुआ मोह और वह मोह यानी परवश मोह। शौक खुद का खड़ा किया हुआ होता है। यदि उसमें से निकलना हो तो निकल सकता है।

खाने-पीने में हर्ज नहीं लेकिन मोह है या नहीं? उस समय अंदर अलग कर देना चाहिए। ब्रेक लगाकर (ज्ञान जागृतिपूर्वक) काम करना चाहिए। हमारा विज्ञान ऐसा नहीं है कि आपने यह क्यों किया?

प्रश्नकर्ता : यह कैसे पता चलेगा कि यह समझकर है और यह मोह से लिया जा रहा है?

दादाश्री : ऐसा जब अंदर से समझ में आ जाएगा तब छूट सकेगा।

प्रश्नकर्ता : अंदर समझ में आ सकता है?

दादाश्री : हाँ, अपना ज्ञान ऐसा है कि तुरंत रोक दे लेकिन फिर भी रुकेगा नहीं, वह सुनेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि प्रतिक्रमण हो जाए तो?

दादाश्री : यदि प्रतिक्रमण हो जाए तो इतना फायदा होगा कि दूसरी बार वैसा कम होगा। प्रतिक्रमण से कम होता है। प्रतिक्रमण हो जाए तो भी अच्छा है।

मोह, विलय होने से होगा आपका काम

मीठा जब मीठा लगे, कड़वा जब कड़वा ही लगे, तब वह मोह कहलाता है और जब दोनों फीके

लगने लगे तो इसका मतलब मोहनीय परिणाम फीके हो गए।

पूरा मोह विलय हुआ कि चली गाड़ी। वर्ना क्या नुकसान है? आत्मा तो भगवान कहलाता है, चौदह लोक का नाथ कहलाता है और उनकी उपस्थिति में लोगों से कहता है, 'आज दुपहर को चाय पीनी थी लेकिन ठिकाना ही नहीं हुआ। अरे पागल! कैसा है यह! चाय विघ्न डालती है उसे। आत्मा की उपस्थिति में सभी चीजें हाज़िर हो जाए।

अब 'व्यवस्थित' ही आपका सब चला लेगा। आपको जो चाहिए वह आपके पास आकर खड़ा हो जाएगा। आपको जिस चीज़ की इच्छा होगी, वह चीज़ आपके पास आकर खड़ी हो जाएगी, आपको मेहनत भी नहीं करनी पड़े, ऐसा है यह 'ज्ञान'।

इसलिए बाहर की बातों की आपको चिंता ही नहीं करनी है। आप अपने स्वरूप में रहो, निरंतर! आपके हिसाब के अनुसार सबकुछ आपके पास आ जाएगा। मेरा भी सब हिसाब के अनुसार ही आता है।

अंदर पड़ा हुआ मोह निकलता है, संयोगों के उदय से

अब कोई मोह नहीं रहा है न आपमें?

प्रश्नकर्ता : नहीं, अब नहीं रहे मोह।

दादाश्री : ऐसा है? अब मोह है या नहीं वह कैसे पता चलेगा? जब कोई अपमान करके निकाल दे, तब पता चलेगा। जब निकाल देंगे तब पता चलेगा न कि ऐसा होता है? वहाँ उसे मोह है उसका।

प्रश्नकर्ता : आपत्ति नहीं है न!

दादाश्री : आपत्ति नहीं है? कीर्ति का मोह है या नहीं? तुझ में कीर्ति का मोह है क्या?

प्रश्नकर्ता : नाम का मोह किस काम का?

दादाश्री : कीर्ति के लिए ही तो अब तक ये

सब मार खाई है। नाम का मोह कीर्ति कहलाता है। कीर्ति के लिए मार खाई। अब कीर्ति के बाद अपकीर्ति आती है। हम कीर्ति लेने जाएँ और अपकीर्ति मिले तब भयंकर दुःख होता है। इसलिए कीर्ति-अपकीर्ति से परे होना है हमें। अब कीर्ति का भी नहीं और नाम का भी मोह नहीं रहना चाहिए हमें। नाम का मोह कीर्ति कहलाता है। कीर्ति के लिए, खुद की कीर्ति फैले तो खुश होता है वह। उसमें अपकीर्ति का भय रहता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : निरा अपकीर्ति का ही है यह। अभी यह पूरा जगत् ही अपकीर्ति में है, जबकि अपना खुद का सुख अपार है।

**इस प्रकार विज्ञान द्वारा मुक्त रहे,
मोह परिणाम से**

यह जो सारा इन सभी फाइलों का समभाव से निकाल करते हो न वे सभी फाइलें मोहवाली चीज़ें थीं। खुद ने ही भरा था राज़ी-खुशी से और कितने मोहपूर्वक! तो अभी उसमें क्या सुख है, ऐसा भास्यमान परिणाम लग रहा है। यह जो भर कर लाया था, वह गलत निकला। इन सबमें क्या सुख है। अतः जहाँ सुख मान रहा था वहाँ पर उसे सुख का भास्यमान परिणाम लगने लगे। इसलिए कृपालुदेव ने कहा है, 'वर्धमान समकित होने से टाळे मिथ्याभास।' जहाँ मोह के परिणाम थे वे खत्म हो गए और भास्यमान हुआ। मिथ्या का आभास हुआ।

कृपालुदेव साधुओं से कहते कि 'भाई, मोह आपको स्पर्श कर लेगा।' और हम लोगों को स्पर्श नहीं करता, ऐसा आपने अनुभव किया है न?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल अनुभव किया है।

दादाश्री : आप पेडर रोड पर रहते हो लेकिन आपको मोह बिल्कुल भी स्पर्श नहीं करता न? मैंने

दादावाणी

देखा, इतने दिनों तक कुछ भी नहीं है। किसी भी प्रकार का मोह स्पर्श नहीं करता है। है न! क्या मोहमई नगरी चली गई है? और पहले तो यदि जब में पैसे हों और फोर्ट एरिये में गए तो ये लेने का मन होता था, मोह खींचता था, चीजें खींचती थीं। नहीं खींचती थीं? और सभी चीजें ला चुके हों तो फिर गाड़ी! इसके बजाय फॉरिन की गाड़ी लाएँ। 'अरे, जो गाड़ियाँ हैं, वे?' तब कहेगा, 'नहीं, फॉरिन की हो तो....' अर्थात् किसी न किसी मोह में पड़ा ही रहता था। और अब मुंबई में भले ही कुछ भी बिक रहा हो लेकिन उस पर दृष्टि नहीं जाती। कोई भी चीज आकुल-व्याकुल नहीं करती। मोह भले ही

कितना भी उफान पर हो फिर भी हमें स्पर्श नहीं करता।

ऐसा कलियुग है, दूषमकाल है, मुंबई जैसी मोहनगरी है, फिर भी मुझे कुछ भी स्पर्श नहीं करता और निरंतर समाधि, बीस सालों से निरंतर समाधि रहा करती है। बोलो अब, अभी इस मोहनगरी में ऐसा होता होगा?

अतः यह विज्ञान ही अलग है, अक्रम विज्ञान है, अलौकिक विज्ञान है, तुरंत ही मोक्षफल देनेवाला है। अतः हम सबको तो यहाँ काम निकाल लेना है।

- जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- | | |
|-------------|---|
| भारत | + 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में) |
| | + 'साधना' पर हररोज - रात ९-३० से १० (हिन्दी में) |
| | + 'दूरदर्शन - गिरनार' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में) |
| | + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में) |
| USA | + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में) |
| UK | + 'विनस' (डीश टीवी चैनल 805-युके) पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में) |

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- | | |
|--------------------|--|
| भारत | + 'साधना' पर हर रोज - सुबह ७-४० से ८-१० और शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में) |
| | + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में) |
| | + 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में) |
| | + 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में) |
| | + 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में) |
| USA | + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST |
| USA-UK | + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में) |
| Australia | + 'कलर्स' चैनल पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में) |
| Singapore | + 'कलर्स' चैनल पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में) |
| New Zealand | + 'कलर्स' चैनल पर हर रोज सुबह ५-३० से ६ (हिन्दी में) |

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : (दादा मंदिर) 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भुज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बेंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादावाणी

अन्य राज्यों (गुजरात केसिवा) में चल रहे साप्ताहिक सत्संग केन्द्रों की जानकारी

क्रम	सेन्टर	सब सेन्टर	फोन नं	दिन तथा समय
1	मुंबई	अंधेरी (ई.)	9322276814	रवि शाम. 6 से 8.30
2		अंधेरी (वे.)	9004370385	रवि शाम. 5 से 7.45
3		बोरीवली (वे.)	9820135665	रवि शाम. 5.30 से 8
4		भीवंडी	9860292129	रवि शाम. 5 से 7.30
5		दादर	9324154842	रवि शाम. 5 से 7.30
6		डोंबीवली (ई.)	9869575684	रवि शाम. 4 से 7
7		घाटकोपर (ई.)	9322240918	रवि शाम. 5 से 8
8		ग्रान्ट रोड	9869414631	रवि शाम. 5 से 8
9		कांदीवली (ई.)	9833700021	रवि शाम. 5 से 7
10		कांदीवली (वे.)	9323603232	रवि शाम. 5 से 8.30
11		नालासोपारा (वे.)	9324342106	रवि शाम. 4.30 से 7.30
12		मीरा रोड (ई.)	9867221393	रवि शाम. 4.30 से 7.30
13		मुलुंड (वे.)	98219 96663	रवि शाम. 5 से 8
14		वाशी	9820111357	रवि शाम. 4 से 6
15		विले पार्ले (ई.)	9820260431	रवि शाम. 5 से 8
16	हैदराबाद		9989877786	रवि सुबह 10.15 से 12.30
17	मुझरफरपुर		9608030142	रवि शाम. 6.30 से 9
18	भिलाई		9827481336	रवि सुबह 10 से 12
19	रायपुर		9329644433	रवि सुबह 9 से 11
20	दिल्ली		9810098564	रवि शाम. 5 से 7
21	गुरगाँव		9810307602	रवि सुबह 10.30 से 12.30
22	बेंगलोर		9590979099	रवि शाम. 4.30 से 6.30
23	हुबली		7795394434	रवि दोपहर. 3.30 से 5.30
24	ईन्दौर		9039936173	रवि शाम. 5 से 7
25	जबलपुर		9425160428	रवि शाम. 4 से 6
26	भोपाल		9425024405	रवि शाम. 5 से 7
27	अमरावती		9422915064	रवि सुबह 10 से 12
28	औरंगाबाद		8308008897	रवि शाम. 5.30 से 8
29	जलगाँव		9420942944	रवि शाम. 5 से 7
30	नागपुर		9970059233	रवि सुबह 9.30 से 11
31	पुणे		9422660497	रवि दोपहर. 3.30 से 5.30
32	जालंधर		9814063043	रवि सुबह 10 से 12
33	जयपुर		8290333699	रवि दोपहर. 2 से 5
34	पाली		9461251542	रवि दोपहर. 12 से 2
35	गाझीयाबाद		9968738972	दूसरे - चौथे रवि दोपहर. 1.30 से 4
36	वाराणसी		9795228541	रवि दोपहर. 3 से 5
37	कोलकाता		9830006376	रवि शाम. 5 से 7

सत्संग स्थल की जानकारी के लिए सेन्टर के दिए गये फोन नं पर या 079-39830400 पर संपर्क करें या

www.dadabhagwan.org वेब साईट की मुलाकात लें।

दादावाणी

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१९ मार्च : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पूज्य नीरू माँ की आठवीं पुण्यतिथि महोत्सव की शुरूआत सुबह ६.३० बजे प्रभातफेरी से हुई। उसके बाद महात्माओं ने पूज्य नीरू माँ की समाधि पर सामूहिक प्रार्थना-चरणविधि और आरती की। पूज्यश्री ने समाधि पर दर्शन करने के बाद आशीर्वचन कहे। सुबह १० से ११ जगकल्याणर्थे स्वरूप कीर्तन भक्ति की गई। उसके बाद पूज्य नीरू माँ की नई स्पेशियल वीडियो सी.डी दिखाई गई, जिसमें पाँच आज्ञा पालन पर आधारित सत्संगों का सुंदर संकलन था। शाम को आयोजित कार्यक्रम के दौरान पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा ऑडियो बुक (दादा भगवान प्ररूपित पुस्तकों का ऑडियो रिकॉर्डिंग) का उद्घाटन किया गया। उसके बाद भाईयों के आप्तसिंचन के सातवें बेच के १२ भाईयों और बहनों के आप्तसिंचन के चौथे बेच की १५ साधक बहनों की समर्पण विधि हुई। साधकों ने पूज्यश्री, माता-पिता, परिवार और महात्माओं से आशीर्वाद प्राप्त किए। एक आप्तकुमार भाई को आप्तपुत्र तथा एक आप्तकुमारी बहन को आप्तपुत्री का पद दिया गया। पूज्यश्री की निश्रा में रात को स्वरमणा की ओडियो सीडी में जिन्होंने अपना स्वर दिया है, ऐसे दो गायक कलाकारों द्वारा विशेष भक्ति कार्यक्रम हुआ। महात्माओं ने पूज्य नीरू माँ रचित पदों का अद्भुत आनंद उठाया। लगभग आठ हजार महात्माओं ने पूरे दिन के कार्यक्रम का आनंद उठाया।

२० मार्च : पूज्यश्री ने सुबह सीमंधर सिटी से यू.के, जर्मनी, स्पेन सत्संग यात्रा के लिए प्रस्थान किया। लंदन के हीथरो एयरपोर्ट पर लगभग २०० महात्माओं ने पूज्यश्री का स्वागत किया।

२२-२३ मार्च : कई सालों बाद लंदन में पूज्यश्री का सत्संग आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम के लिए स्थानीय महात्मा लंबे अरसे से तैयारियाँ कर रहे थे। सत्संग में आनेवाले लोगों के लिए सत्संग हॉल भी छोटा पड़ा। ११५ लोगों ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री की हाजिरी से स्थानीय सेन्टर को बहुत ही प्रोत्साहन मिला।

२५-२८ मार्च : उत्तर यू.के के ब्रेडफोर्ड, बोल्टन और एस्टोन में भी पूज्यश्री का सत्संग कार्यक्रम आयोजित हुआ। एस्टोन (मान्चेस्टर) में आयोजित ज्ञानविधि में ५५ लोगों ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

२९-३१ मार्च : यू.के में लेस्टर भी लंदन के बाद का सबसे बड़ा सेन्टर है, पूज्यश्री की निश्रा में वीकएन्ड के कारण शिविर जैसा माहौल बन गया। १०५ लोगों ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और लगभग ७५० महात्मा उपस्थित रहे। सोमवार के वन डे पिकनिक में अबे पार्क में लगभग २०० महात्माओं ने डब्बा (टिफिन) पार्टी की। पार्क में आयोजित दादा दरबार में स्थानीय महात्माओं को व्यक्तिगत रूप से पूज्यश्री से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ।

१-२ अप्रैल : दो साल तक पास के वोल्सोल सेन्टर में सत्संग होने के बाद फिर से बर्मिंघम में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के दौरान ४५ लोगों ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं की हाजिरी के कारण हॉल संपूर्ण भर चूका था।

३ अप्रैल : सेन्ट्रल लंदन की एक दिन की पिकनिक में लगभग १०० महात्मा जुड़े थे। पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ ग्रीनवीच ओब्जर्वेटरी और प्लेनेटेरियम की मुलाकात ली। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ डब्बा पार्टी का आनंद लिया। यह एक अनोखा अनुभव था कि जब पूज्यश्री ने लंदन की प्रसिद्ध अन्डरग्राउन्ड ट्रेन (ट्यूब) में और उसके बाद लंदन की प्रसिद्ध ब्लेक केब में और लौटते समय केनेरी व्हार्फ से आती हुई DLR ट्रेन में सफर किया।

४-५ अप्रैल : हेरो (लंदन) में आयोजित तीन दिन के कार्यक्रम में शिविर जैसा माहौल बन गया। २०० लोगों ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। आप्तपुत्र द्वारा अंग्रेजी में भी विशेष सत्संग किया गया। ज्ञानविधि में २००० लोगों ने भाग लिया। और कई युवा प्रोफेशनल भी उपस्थित रहे।

७-८ अप्रैल : ७ अप्रैल को पूज्यश्री ने लंदन के राइस्लीप में नए सत्संग सेन्टर 'दादा दर्शन' का उद्घाटन किया। भारत से बाहर संस्था का यह पहला सेन्टर है। दो मंजिला बिल्डिंग में १२००० वर्ग फुट की जगह में सत्संग हॉल और अन्य प्रवृत्तियों के लिए भी जगह है। शाम को हुए GNC कार्यक्रम में लगभग ८० बालकों ने नृत्य, संगीत और नाटक द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। फोटो सेशन दौरान बच्चों ने पूज्यश्री के साथ फोटो भी खिंचवाए। लगभग ६५० महात्माओं ने कार्यक्रम का आनंद लिया। ८ अप्रैल को इस नए सेन्टर पर सुबह-शाम 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ। जिसमें कई महात्माओं ने व्यक्तिगत रूप से पूज्यश्री से मिलकर खुद के प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया।

दादावाणी

Puja Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2014

**Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) &
email for USA - info@us.dadabhagwan.org, for Canada - info@ca.dadabhagwan.org**

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
13-Jun	Fri	New Jersey	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Edison Hotel, 3050 Woodbridge Avenue (GPS Address 1173 King George Post Rd) Edison, NJ 08837	Ext. 1020 newjersey@ us.dadabhagwan.org
14-Jun	Sat	New Jersey	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
15-Jun	Sun	New Jersey	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
15-Jun	Sun	New Jersey	Gnanvidhi	2-00 PM	6-00 PM		
16-Jun	Mon	New Jersey	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
17-Jun	Tue	New York	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM	The Royal Regency Hotel, 165 Tuckahoe Rd, Yonkers, NY 10710	Extn. 1021 newyork@ us.dadabhagwan.org
18-Jun	Wed	New York	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
18-Jun	Wed	New York	Gnanvidhi	4-30 PM	8-00 PM		
19-Jun	Thu	New York	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
20-Jun	Fri	Toronto	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation (Canada), 80 Brydon dr, Etobicoke - M9W 4N	Extn. 1006 toronto@ ca.dadabhagwan.org
21-Jun	Sat	Toronto	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
22-Jun	Sun	Toronto	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
22-Jun	Sun	Toronto	Gnanvidhi	2-00 PM	6-00 PM		
23-Jun	Mon	Toronto	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
28-Jun	Sat	Charlotte	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM	Hindu Center Of Charlotte, 7400 City View Drive, Charlotte NC 28212	Ext. 1027 charlotte@ us.dadabhagwan.org
29-Jun	Sun	Charlotte	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
29-Jun	Sun	Charlotte	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
30-Jun	Mon	Charlotte	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
30-Jun	Mon	Jackson MS	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Agricultural Museum, 1150 Lakeland Dr, Jackson, MS 39216.	Ext. 1030 jackson@ us.dadabhagwan.org
1-July	Tue	Jackson MS	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
1-July	Tue	Jackson MS	Gnanvidhi	4-30 PM	8-00 PM		
2-July	Wed	Jackson MS	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
3-July	Thu	Dallas	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	D/FW Hindu Temple, Ekta Mandir, 1605 N. Britain Road, Irving, TX 75061	Ext. 1026 dallas@ us.dadabhagwan.org
4-July	Fri	Dallas	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
5-July	Sat	Dallas	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
5-July	Sat	Dallas	Gnanvidhi	2-00 PM	6-00 PM		
6-July	Sun	Dallas	Follow up - Aptputra	10-00 AM	12-30 PM		
8-July	Tue	St. Louis	GP SHIBIR	9-30 AM	7-00 PM	St. Louis Union Station Doubletree by Hilton Hotel, 1820 Market Street, St. Louis, MO 63103	Ext. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
9-July	Wed	St. Louis	GP SHIBIR	9-30 AM	7-00 PM		
10-July	Thu	St. Louis	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
10-July	Thu	St. Louis	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
11-July	Fri	St. Louis	General Satsang	9-30 AM	7-00 PM		
12-July	Sat	St. Louis	Guru Pujan	8-00 AM	6-30 PM		
13-July	Sun	St. Louis	GP SHIBIR	9-30 AM	12-30 PM		
18-July	Fri	San Jose	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Sunnyvale Hindu Temple, 450 Perisian Drive, Sunnyvale, CA 9408	Ext. 1024 northcalifornia@ us.dadabhagwan.org
19-July	Sat	San Jose	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
20-July	Sun	San Jose	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
20-July	Sun	San Jose	Gnanvidhi	2-00 PM	6-00 PM		
21-July	Mon	San Jose	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
22-July	Tue	Pheonix	Mahatma Satsang	6-00 PM	9-30 PM	Indo-American Community Center, 2809 West Maryland Avenue, Phoenix, AZ 85017	Extn : 1008 phoenix@ us.dadabhagwan.org
23-July	Wed	Pheonix	Aptputra Satsang	6-00 PM	9-30 PM		
24-July	Thu	Los Angeles	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Jain Temple 8072 Commonwealth Ave, Buena Park, CA 90621	Ext. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
25-July	Fri	Los Angeles	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
26-July	Sat	Los Angeles	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
26-July	Sat	Los Angeles	Gnanvidhi	2-00 PM	6-00 PM		
27-July	Sun	Los Angeles	Follow up - Aptputra	9-30 AM	12-00 PM		

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

दाहोद

२४ मई (शनि) - शाम ७ से ९-३० - सत्संग तथा २५ मई (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
२६ मई (सोम) - शाम ७ से ९-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : सिटी ग्राउन्ड, सिंधी सोसायटी के सामने, दाहोद (गुजरात). संपर्क : 9428029280

पुणे

८-९ अगस्त (शुक्र-शनि) - सत्संग तथा १० अगस्त (रवि), - ज्ञानविधि (समय की जानकारी बाकी)
स्थल : वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र, आई माता मंदिर के पास, गंगाधाम चौक, मार्केट यार्ड, शत्रुंजय मंदिर रोड.
संपर्क : 9422660497

अडालज त्रिमंदिर

१४ अगस्त (गुरु) - शाम ४ -३० से ७ - सत्संग तथा १५ अगस्त (शुक्र), दोपहर ३-३० से ७ - ज्ञानविधि
२२ से २९ अगस्त (शुक्र से शुक्र) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ७ तथा ८ ग्रंथों पर वांचन-सत्संग-प्रश्नोत्तरी
३० अगस्त (शनि) सुबह ९ बजे से - दर्शन का विशेष कार्यक्रम

राजकोट

१७ अगस्त (रवि) - रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम (पूज्यश्री की निश्रा में)
स्थल : राजकोट त्रिमंदिर, तरघडीया चोकड़ी, राजकोट-अहमदाबाद हाइ-वे (गुजरात). संपर्क : 9274111393

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१४

सत्संग शिविर : दि. २९ मई से १ जून २०१४, समय : सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७
ज्ञानविधि : दि. ३१ मई, दोपहर ३-३० से ७
तीर्थ यात्रा : दि. २ जून - पूज्यश्री के साथ आगलोड तीर्थ यात्रा शुल्क - रु. 400 Non AC, रु. 600 AC
- यदि आप 2 जून को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 3 जून का लें।
- अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से अडालज त्रिमंदिर पहुँचने के लिए सिटी बस 89/1 और ओटो रिक्शा, टेक्सी मिलेगी।
बच्चों-युवकों के लिए हिन्दी शिविर दौरान विशेष संस्कार सिंचन शिविर

दि. 30 तथा 31 मई - वयमर्यादा : 7 से 12 साल - बच्चें, 13 से 16 साल - लड़कें / लड़कियाँ
इस शिविर में शामिल होने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। जिसमें किड्स केम्प के लिए रु. 50 रजिस्ट्रेशन चार्ज रखा गया है। किड्स केम्प का रजिस्ट्रेशन चार्ज हिन्दी शिविर के समय यहाँ अडालज आ कर दे सकते हैं। युथ केम्प निःशुल्क है। रजिस्ट्रेशन के लिए अपने बच्चों का पूरा नाम, उम्र, फोन नं., सेन्टर का नाम ये सब जानकारी देनी होगी। ये जानकारी आपको register.hindi@dadabhagwan.org ईमेल आईडी पर भेजनी होगी। संपर्क : 079-39830939

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. ३-४ जून, २०१४

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते हैं, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मई २०१४
वर्ष-१ अंक-७
अखंड क्रमांक - १०३

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

मोह ही करवाए पराई भूमिका में तन्मयाकार

शादी-ब्याह और व्यवहारिक कार्य निबटाने हैं। मैं भी व्यवहार से निबटाता हूँ और आप भी व्यवहार से निबटाते हैं, लेकिन आप तन्मयाकार होकर निबटाते हो और मैं अलग रहकर निबटाता हूँ। सिर्फ भूमिका बदलने की ज़रूरत है, और कुछ भी बदलने की ज़रूरत नहीं है। यानी कि शादी-ब्याह में जाओ, लेकिन वे ऐसा नहीं कहते कि आप तन्मयाकार रहो। आपका मोह आपको तन्मयाकार करता है। वर्ना यदि आप तन्मयाकार नहीं रहोगे तो उसके लिए आपको कोई डॉटेगा नहीं कि 'आप क्यों तन्मयाकार नहीं रहते?' ऐसे तन्मयाकार रहने से तो कुछ भूल हो जाए तो लोग शिकायत करेंगे। आपको भी हमने तन्मयाकार नहीं रहो ऐसा रास्ता कर दिया है। खुद की भूमिका में रह सकें, परायी भूमिका में नहीं जाएँ ऐसा हमारा यह ज्ञान है। परायी भूमिका मतलब चंदूभाई (फाइल नं. १)।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.